लीला सुधा सिन्धु
पद्य रामायण
: रचयिता :
श्रीमद् स्वामी रामहर्षणदास जी महाराज

॥ श्री सीतारामाभ्याँ नमः ॥

लीला सुधा सिन्धु

(पद्य रामायण)

* रचयिता *

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

वसंत पंचमी

(विक्रम सं २०६३)

लीला सुधा सिन्धु (पद्य रामायण)

रचयिता :

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

प्रकाशक :
प्रकाशन विभाग
श्री रामहर्षण कुंज,
परिक्रमा मार्ग,
अयोध्या (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष : (०५२७८) २३२३१७

तृतीय आवृत्ति : ११००
वसंत पंचमी
(विक्रम सं २०६३)

मूल्य : रु. १५० मात्र

टाइप सेटिंग एवं डिज़ाइन :
डी टी पी सेन्टर, सरस्वती सदनम कॉम्पलेक्स,
धरमपेठ, नागपुर - ४४० ०१०
दूरभाष : (०७१२) २५६०९८९
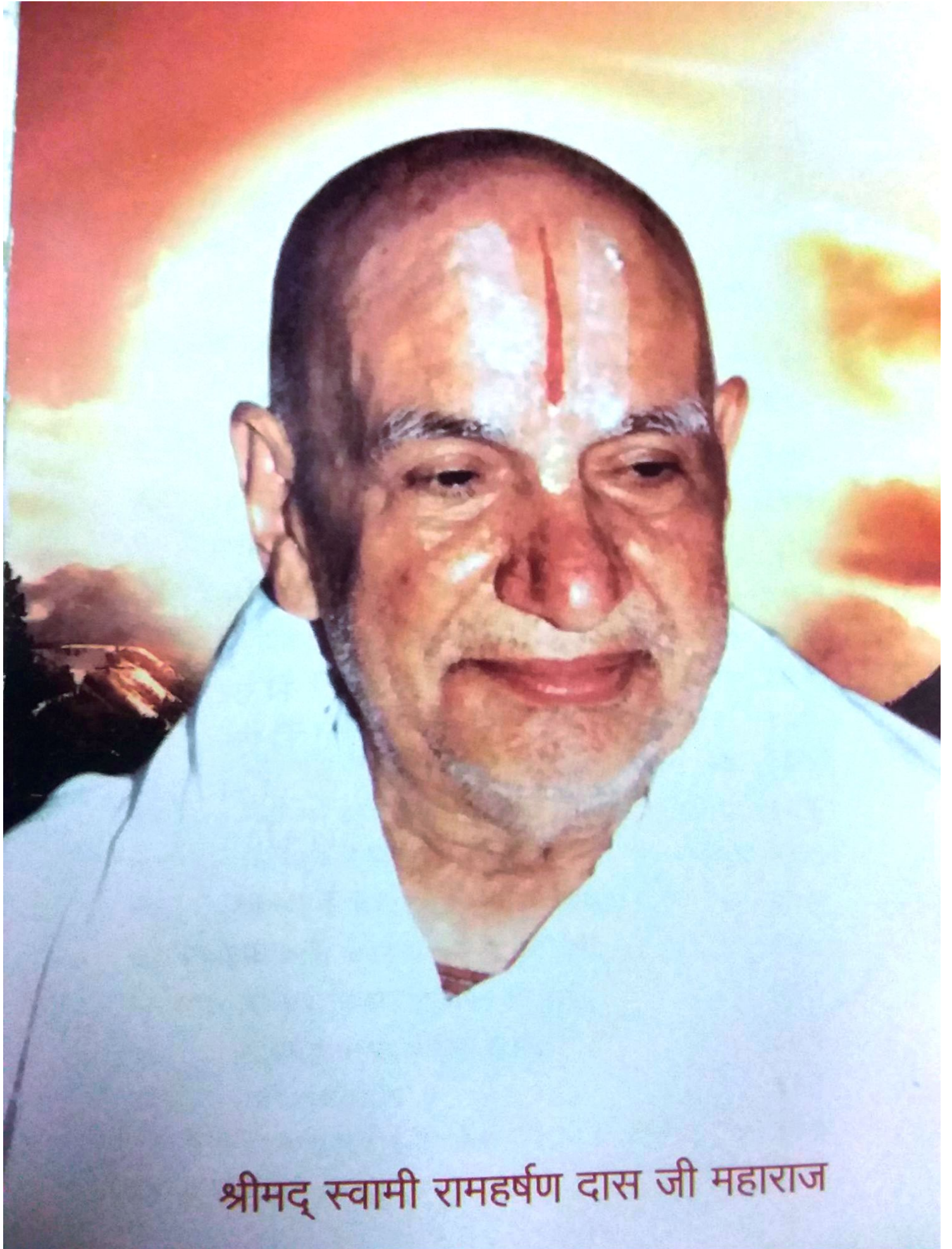
श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दास जी महाराज

सिद्धि कुँअरि रुख पाय सखी इक, दौरी बलहिं सम्हारी।
सिय पिय फेंटा पकरि प्रकर्षी, लिपटि झपटि बुधवारी।।
निज दल लाय सिद्धि कहँ सौंपी, हँसी बहुरि दै तारी।
मसलि गुलाल मुखहिं सोउ हरि कहँ, बोरी रंग मझारी।।
हर्षण पाणि पकड़ि नचवाई, निमिकुल की उजियारी।

(७७२)

आज सखी श्री अवध विहारी।
चंचल नयन सयन के दस दिशि, वर्षत बाण सबहिं संहारी।।
तेहि पै मुसुकनि मार के टोना, भाव भंगिमा जादू डारी।
होरी समर बची नहिं कोऊ, जेहि न जीत सिय पिय रस वारी।।
अबिर गुलाल के बादल छाये, वर्षत रंग सरित बढ़ भारी।
बूड़ि गये अलिबृन्द अनेकन, तन मन बुधि सब भये खुआरी।।
रस मिलि रसहिं भई अलबेली, पहुँची रस के सिन्धु अपारी।
हर्षण मिथिला बाम के भाग्यहिं, कौन कहै कवि युक्ति विचारी।।

(७७३)

होरी खेलैं रघुवीरा जनकपुर।
सारी सरहज संग में लीन्हें, रंग केलि सुख सीरा।।
उड़त अबीर कुँकुमा केशर, रंगनि भीजत चीरा।।
जेहि रुख ते विधि हरि हर नाचत, माया अरु मुनि धीरा।।
मैथिल नारि पकरि तेहिं वश करि, मुख में मसल अबीरा।।

अंजन आँजि वसन सिर ढाकी, रही न जाय स्व तीरा॥
प्रेम विवश पूरण परमेश्वर, वेद-वेद्य हिय हीरा॥
भक्त बिना क्षण रहत न हर्षण, यथा मीन बिन नीरा॥

(७७४)

खेलि रहे दोउ नरपति लाला लखोरी।
निज निज सखन सहित रंग राते, रघुकुल निमिकुल बाला। लखो.।
लक्ष्मीनिधि कहुँ पकरि राम को, मसलत मुखहिं गुलाला। लखो.।
कबहुँ श्याल मुख मसलत रोरी, राम रसिक सुख शाला। लखो.।
कहुँ वे इनपे कहुँ ये उनपै, चितवनि मुसुकनि डाला। लखो.।
वशी करत इक एकहिं दोऊ, परे प्रेम के पाला। लखो.।
मारि अबीर रंग पिचकारी, पर दल करत विहाला। लखो.।
बजत वाद्य हो होरी गावत, हर्षण होत निहाला। लखो.।

(७७५)

निरखु नवेली आज री दोउ खेलैं रंगीली होरी।
जनक सुवन श्री दशरथ नन्दन, रंग रंगे छबि छाजरी॥
मारि अबीर कुंकुमा केशर, तम ते किय जनु सांझरी।
तकि पिचकारी मार परस्पर, रंग सरि बूड़ समाज री॥
वीणा वेणु मृदंग ढोल डफ, बजत झांझ सुख साज री।
होरी समर सुखहिं सुख वर्षत, श्याल भाम रस राज री॥
चढ़े विमान बिबुध अवलोकत, जय जय जय सब गाज री।
हर्षण हनहिं निशान सुमन झरि, स्वर्ण समय भल भ्राज री॥

(७७६)

सिद्धि कुँअरि अरु सिय सुखदाई।
करत केलि कमनीय रंग की, सोहीं दोउ ननद भौजाई॥
निज निज सखिन समेत प्रहर्षी, करहिं कला हो होरी गाई।
मारि अबीर कीन्ह अधियारी, रंग मय मही छजति छबि छाई॥
बजत वाद्य उमगत उर आनंद, सो शोभा सुख हिय न समाई।
आइ मिली सुर रमणी प्रमुदित, खेलहिं फाग स्वभान भुलाई॥
झरत पुष्प नभ ते शुचि सुरभित, श्रवणन जय जय शब्द सुनाई।
हर्षण देव लखत है ओटे, जब तब दुंदुभि देत बजाई॥

(७७७)

मिथिलापुर को खोरनि खोर, खेल बसंत श्री राजकिशोर।
निजदल संग बनाव बनाये, रंग केलि की साज सजाये,
खेलवारी सिर मौर॥
बसन विभूषण अँग अँग साजै, करहिं लिए पिचकारी भ्राजै,
वर्षत रंगनि बोर॥
मारि अबीर कुंकुमा केशर, कियो निबिड़ तम भुंइ अखिलेश्वर,
प्रेम प्रमोद न थोर॥
बजत वाद्य हो होरी गावत, पुर को सुख के सिन्धु समावत,
उठी लहर चहुँ ओर॥
जनकपुरी नर नारि जेते, बिके मोल प्रमुदित ते ते,
रामहिं लखत विभोर॥

वर्षहिं रंग अबीर गुलाला, सोऊ हरि दल कीन्ह विहाला,
लीन्हे चित को चोर॥
हर्षण देव सुमन बहु वर्षे, जय जय कहत सबन हिय हर्षैं,
निरखत श्यामल गौर॥

(७७८)

देखो कंचन विपिन मची होरी।
श्याल भाम दोउ अनुज सखा लिय, लै सिधि सिय सखिन अथोरी॥
पुर नर नारि औ जनपद वासी, मिलि के रंग केलि में बोरी।
महा भीर भइ रंग भूमि महँ, भिरे हैं जोरिहिं ते जोरी॥
वर्षहिं रंग कुंकुमा केशर, मारा मार मची घोरी।
गाइ फाग उछरहिं अरु कूदहिं, वाद्यहु बहु बजत झंझोरी॥
आनँद सिन्धु मगन भो त्रिभुवन, सुर मुनि खेले हैं होरी।
तियन सहित बहु सुर पुर वासी, वर्ष विमानन रँग रोरी॥
जय जय कहत सुमन झरि लावत, नृत्य गान करि भे भोरी।
महि महँ सोह अबीर के पर्वत, गगन अरुण घन सब ठौरी॥
रंग सरित बहि चली धरणि पै, कौन कहै कवि सुख सोरी।
हर्षण भूलि फाग सब खेली, जल क्रीड़त गे गृह कोरी॥

(७७९)

राम जन्म सिय जन्म बधावा बाजै री।
वर्ष ग्रन्थि दोउ लाल लली की, सुख प्रद सबहिं समाजै री॥

प्रति प्रति वर्षहिं जनक सुनैना, उत्सव करि सुख राजै री।
तिय सह श्रीनिधि को कह कहियत, भाम भगिनि रस राजै री॥
दान मान विप्रन बहु पूजी, याचक गणन निबाजै री।
पंच धुनी छावति पुर मिथिला, महि अरु व्योम विभ्राजै री॥
सुरहु सुमन झरि जय जय उचरत, चढ़े विमान विराजै री।
हर्षण आनँद कहत नगर को, शेष महेशहु लाजै री॥

(७८०)

चलो चलो देखि आवै आली सिद्धि सदन फुल बंगला।
फूलन खम्भ फूल की भीती, फूलन छप्पर फूल को जँगला॥
छत्र चमर छड़ि फूल के राजत, फूल सिंहासन बन्यो है चँगला।
तेहिं पे राम सिया पधराई, फूल मयहिं मधु मूर्ति के अंगला॥
वसन विभूषण फूल के धारे, सोह रहे रँग में रँगला।
फूल मयी सब सखी सेविका, करहि नृत्य अरु गान सुभगला॥
फूलन सजे वाद्य वर बाजत, फूलहिं फूल दिखा जन खंगला।
हर्षण फूल भवन लखि फूले, सूँघि सुगंध भयो मन पगला॥

(७८१)

धनि धनि मिथिला विपिन विहार।
श्याल संग रघुनन्दन विहरत, चौबिस वन सुख सार॥
विविध भाँति की केली करिके, वितर अनन्द अपार।
पुष्प महल कहँ लता भवन महँ, वसत जगत उजियार॥
हर्षण हर्ष कौन कवि वरणै, बहति नित्य रस धार।

(७८२)

निरखति पूनम चन्दा कुँअर की रानी।
सियहिं साथ लै चढ़ी अटा पै, श्रीधर पुत्रि सनन्दा।।
जनक लली मुख लखति जबहिं सों, भूलति भान अमन्दा।।
बार बार विधु सिय मुख पेखति, तौलति दुहुन स्वछन्दा।।
शत शत शारद शशि कहँ वारति, सिय मुख महँ सुख कन्दा।।
करति प्रशंसा कमल कली की, पियति मधुर मकरन्दा।।
देखि दशा निज भाभी केरी, बोली नवल ननन्दा।।
हर्षण हर्ष केर कहु कारण, परी प्रीति के फन्दा।।

(७८३)

प्राण पियारी ननंदा, सुनो सुख कन्दा।
शशि ते शत गुन लखि तव आनन, आनंद लही अमन्दा।।
करि विचार देखेउँ सब भाँतिहि, निरस लगै मोहि चन्दा।।
विधु वदनी कहि कवि तोंहि गावहिं, उचित न हर्ष स्वछन्दा।।

(७८४)

तुम समान तुम प्यारी।
रती रमोमा शारद शशि शत, बार बार बलिहारी।।
मधुते मधुर अमिय मुख निरखत, रमत राम रस वारी।
तेहिं ते चन्द्र बदन की उपमा, रुचति न हिये हमारी।।
अनुपमेय आनन तव हर्षण, आनँद वर्धन कारी।

(७८५)

झरन लागी प्यारी ननदी झरनिया।
तेरी चरित चन्द्रिका रस मय, पूर्ण सदा बिनु बाध वरणिया॥
मिथिला अवध गगन में उदिता, शीतल सुखद प्रकाश किरनिया।
कर्णानन्दनि प्रिय कर नयननि, निशिदिन नाशति जी की जरनिया॥
जो कोउ लखत सुनत भल भावन, पियत रसहिं रस शान्ति सरनिया।
परिकर कुमुद खिलें जेहिं देखी, पिय-चकोर को हृदय हरनिया॥
चेतन-औषधि पुष्ट बनावति, सुधा वरषि भव रोग दरनिया।
हर्षण रहौं विलोकत छन छन, तेहि बिन को भव सिन्धु तरनिया॥

(७८६)

सेवति सिधि श्री दशरथ किशोर।
निरखि निरखि नख शिख छवि बाँकी, प्रेम पगति है तन मन विभोर॥
स्वपति संग विहरत लखि रामहिं, लहति हृदय में आनँद अथोर।
कहुँ इकान्त सिय पिय सों हर्षण, सखिन सहित रस हाँस में बोर॥

(७८७)

तू जिउ जीवन प्राण पियारा।
सरहज के नाते श्री सिय वर, करि करि प्रेम पसारा॥
देते रहियो दरश दृगन को, ऐसेहि भवन मझारा।
सेवा ते बंचित जनि करियो, दासि अनन्य विचारा॥
सबहिं भाँति गुनि आपनि हर्षण, कीजिय सबहिं सम्हारा।

(७८८)

मुसुकनि मोहे मन को हमारे, राम लला मोरे प्राणों के प्यारे।
सर्वस वारि दई तोहिं आपन, लीन्ह बना निज नैनों के तारे॥
पियति सदा मुसुकानि माधुरी, तऊ अतृप्त चित्त सुख सारे।
विधु कर निकर हँसी हर्षावति, सुधा वर्षि सुन्दर मख वारे॥
हर्षण हसन कला कहँ सीखी, कीन्हेउ मैथिल मन मत वारे।

(७८९)

नयन सयनि मन मोहनि भावनि।
प्रेम पगी चितवनि भरि जादू, जड़ चैतन्य फँसावनि॥
विषयी साधक सिद्ध के चित्तहिं, चोरि के भान भुलावनि।
वशी करनि अघ ओघ विदारनि, जोहत जगत छोड़ावनि॥
शील सकोच कृपा ते पूरित, बिनु श्रम प्रेम बढ़ावनि।
रस ते रसी रसहिं को चाहति, रस मय रस वर्षावनि॥
आनँद कन्द अनन्द प्रदायनि, अत्यानन्द रमावनि।
सीता रमण सिद्धि के सदनहिं, हर्षण हिय हर्षावनि॥

(७९०)

जादू भरे तोरे नैन समलिया।
जेहि चितवत तेहिं चित्त को चोरी, वशी करत सुख दैन॥
चंचल चतुर श्रवण लौ बड़रे, कजरारे अति पैन।
अति अनियारे अजब जौहरी, करत कतल करि सैन॥

जालिम जुलुम करत बरजोरी, कहर मची हिय ऐन।
गजब गुमान भरे इठलावत, चलत रहत दिन रैन॥
किय कतलाम जनकपुर सिगरो, बोलि सकैं नहिं बैन।
हर्षण तेहिं पै तिय गति न्यारी, चित्त धरत नहिं चैन॥

(७९१)

रघुवर लोचन लोभ न जावै।
जब जब पलक गिरै दृग तारे, तब तब जिय तड़पावै॥
तनिक विरह तव अखियन केरो, मम अखियन नहिं भावै।
विरह व्यथा बेधति बहुतेरी, चित में चैन न आवै॥
मनहु परम निधि खोय के लालन, कृपण हृदय घबरावै।
तेहि ते तनिक न नयनन न्यारे, निज नयनहिं लै जावै॥
परम प्रीति इनकी लखु प्यारे, लखतउ आँसु बहावै।
हर्षण प्रेम भरे लखि सिद्धिहिं, सिय पिय दृगन जुड़ावै॥

(७९२)

चोरि लियो चित चितवनि डारी, भूली सुधि बुधि महल अटारी।
खंज कंज मृग मीन लजावन, अँखियाँ ललित लुभावन वारी॥
शील सँकोच कृपा करुणागरि, रस ते पूरि सुखन सुख सारी।
श्वेत श्याम रतनारि सुभग तम, अमिय हलाहल मद भरि ढारी॥
जगहित हर्ष त्रिवेणी संगम, मज्जहिं परिकर नर अरु नारी॥

(७९३)

अब तो प्रेम पगी मैं तोरे।
सुधी न रही धन धाम की मोरे॥
अमिय भरी अधरन अरुणाई, देखि देखि हौं गई बिकाई,
लोचन लोभी लखतउ लोरे॥
रस को श्रोत बहत जहँ तेरे, पियति रसिक दृग दोनन ले रे,
लहत हृदय आनन्द अथोरे॥
धन्य भाग्य मम नँनद की आही, पियति अधर रस नित चित चाही,
रहत सदा रस हीं रस बोरे॥
नक मुक्तहु बड़ भागिनि मोहि ते, पीवति मधु लहि कृपा को तेहिं ते,
हर्षण सिद्धि चित्त को चोरे॥

(७९४)

गालों ते नृपनंद लुभाते कानन ते कुण्डल को हलरी।
अरुण श्याम सुन्दर चमकीले, गदरीले मन मोहन भल री॥
भरे सुचिक्कन मधु ते मधुरे, चित्त चोर वश करन सबल री।
कुण्डल झाई मनहु मीन युग, करत किलोल सुधा सर पल री॥
शोभा कहत कौन कवि पारी, मानहु परमानँद सुथल री।
धन्य सिया जेहि चुम्बति मनभरि, हर्षण हृदय परत नहिं कल री॥

(७९५)

नयनन नन्दन सिय सुख कन्दन, छबि ते छाये छाये हो।
सिर क्रीट मुकुट सुसोह जगमग, भानु शत द्युतिमान है॥

जेहिं लागि मुक्ता लोर लहरति, भाल पै छबि खान है।
कच कलित कुंचित मोह मन, कारे मनहु भ्रमरावली॥
शुचि गंध गंधित छूटि कंधहिं, छवि छहरि अलकावली।
॥मनहिं लुभाये॥
भल भाल भहरत खौर केशर, ऊर्ध्व पुण्ड सु सोहही।
कल कान कुंडल लोल मणि मय, मदन मन कहँ मोह ही।
धनु काम भृकुटी शोभ रसिकन, राग सरहिं बढावती।
दृग दोउ बड़रे कर्ण लौं, छबि रेख कज्जल छावती॥
॥शील समाये॥
शुक नाक शोभित लसति मुक्ता, अधर अमृत पान को।
हिय हर्ष लहरति प्रेम पगि, धनि भाग जेहिं सम आन को।
रस ते प्रपूरित गंड थल, चिक्कन सुचमकत अह अहा।
कोउ रसिक पीवत पाइ प्रिय, तब कृपा परमानँद लहा॥
॥सबहिं विसराये॥
लस अधर अरुणिम दन्त दाड़िम, देखि को को नहिं फँसी।
नर नारि मोहनि हरणि हिय, बिधु कर विनिन्दक है हँसी।
लखि चारु चिबुकहिं लाजती, है कपौती कुढ़ि मन मनहिं।
धनि धन्य आनन देश प्यारो, हिय हर्ष वर्धन छन छनहिं।
॥कहहि को गाये॥
कल कम्बु कंठ सु आभरण, भूषित अहो अति ही छजै।
कवि कहै को वृषभ कंधहिं, धनुमाथ धरि भक्तन भजै।
वर वाहु बड़री जानु लौं, मणि बन्ध अंगद ते लसैं।

नख चन्द्र वारिज अंगुली, मुदरी मनोहर दृग धसैं।
चितहिं चोराये॥

हिय हर माणिक रत्न मणि, शशि सूर्य नखतन तेज मय।
अरु उदर त्रिवली नाभि नव, सोहति जमुन भँवरहिं को जय।
कटि सु केहरि किंकिनी कल, उरु जानु जोहत जग रँगे।
पद नवल नूपुर अरुण तल कहँ, देखि सुर नर मुनि ठगे।
॥ नख द्युति ध्याये॥

वपु नील मरकत नील नीरद, नील नीरज सम अहो।
विधु अमित कामहु कोटि लाजत, लखत वपु कहँ सुख लहो।
पटपीत सुन्दर बाल रवि सम, तड़ित तंतुन जनु बन्यो।
छबि छाय छहरत देह धन बिच, पेखि परिकर सुख सन्यो।
॥ मनहिं मोहाये॥

मधु मधुर मोहन श्याम सुन्दर, रामरघुवर रस मये।
जन नेत्र उत्सव चित्त कर्षक, संग सिय सुख मय लये।
मिथिला पुरी गृह सिद्धि के, विहरहु सदा रस राग भरि।
हृदय हर्ष त्वमेव हर्षण, हर्षहिं हमहुँ तव सेव करि।
॥ आनँद आये॥

(७९६)

रसमय राम सिया रसवारी हो।
हर्षि स्वयं हर्षावहिं जन कहँ, सिद्धि सदन सुख कारी हो॥
आनँद सिन्धु अनन्दहिं पावत, मिथिला महल मझारी हो।

लीला विविध भाँति की करि करि, चन्द्र कीर्ति सह प्यारी हो॥
सास श्वसुर अरु श्याला सरहज, रिझवहिं सिगरी सारी हो।
समय समय सुर मुनि सब सिद्धहु, आवहिं प्रीति पसारी हो॥
दर्शन करि सुख सिन्धु समावहिं, तन मन बुद्धि विसारी हो।
हर्षण श्वसुर पुरी बस यहि विधि, रसिक राय रिझवारी हो॥

(७९७)

प्राण पियारी पियरबा युगलवर।
जीव जीव सुख के सुख सारे, मम उर के उजियरबा॥
रहियो नित्य नयन में झूलत, बसत श्वसुर के घरबा।
निज जन जानि सेव में रखि हैं, सदा सदा सुख सरबा॥
छमि सब चूक बनाये रहिहैं, दासी नृपति कुँअरबा।
देखि दृगन मन मुदित रहौंगी, झारि दुहुँन के तरबा॥
अस कहि सिद्धि अधिक अनुरागी, बहत नैन जल धरबा।
हर्षण राम रसिक सन्तोषे, सर्वस दीन हियरबा॥

(७९८)

मिथिला महल मझारी बसो मोरे प्यारे।
जेहि विधि सुखी रहहु सोइ करिहौ, त्रिकरण बनी पुजारी॥
संग ननंद ननदोई रखिहौं, पलक पुलरिया प्यारी।
ऋतु अनुकूल साज सब सजिहौं, लखि लखि रुची तुम्हारी॥
बन बिहार जल केलि झूलनो, पावस ऋतु अनुहारी।
करि शरदोत्सव ब्याह मनइहौं, उत्सव अति सुखकारी॥

रंग केलि लै सखिन संजोईहौं, संग सब सरहज सारी।
हर्षण अवध नाम नहिं लैयो, बनिकै मिथिला बिहारी॥

(७९९)

बनाय दई रे मोहि बौरी विहरिया।
ब्रह्म निष्ठ को ब्रह्म भुलायो, तन मन प्राण लुभाय लई रे॥
निरखि जब ते श्याम बदनमा, कुल की कानि जनाय छई रे।
बिन देखे नयना नहिं मानत, पीवत प्यास सवाय भई रे॥
गृह को काज मनहिं नहिं भावत, प्रभु पद सेव सोहाय धई रे।
तेहिं ते ननद सहित ननदोई, अपने भवन बसाय दई रे॥
अष्ट कुंज अठयामी सेवा, करि करि ताहि रमाय पई रे।
हर्षण सुख के सिंधु समाई, सिद्धि जन्म फल पाय गई रे॥

(८००)

तोहि उर के बीच बसाय लेवौं।
राम रसिक रसिकिनि सिय साथहिं, मूरति मधुर मोहाय धेवौं॥
नख शिख निरखि नयन भरि शोभा, भव को भान भुलाय देवौं।
विविध केलि करि करि तव सँगे, परमानन्द लुभाय लेवौं॥
तव सुख हेतु करत कैंकर्यहिं, अमृत स्वाद जेमाय जैवौं।
श्याल संग विहरत लखि मिथिला, रस की धार समाय सेवौं॥
सारी सरहज सबैं सलोनी, सेवत देखि रसाय पेवौं।
हर्षण सिद्धि प्रेम रस पगि के, आपन आयु खेलाय खेवौं॥

(८०१)

मिथिला ते जनि जैयो लला जी।
कलित केलि करि कुंजन कुंजन, रस की धार बहैयो॥
लली संग लखि लोनी लीला, नैनन को फल पैयो।
सास श्वसुर शुचि सारी सारहिं, सरहज को सुख दैयो॥
कोटि कोटि कन्दर्प दर्प दल, पुर में धूम मचैयो।
सुख सुषमा श्रृँगार महोदधि, जड़ चेतन लय लैयो॥
पुंसा मोहन मुसुकि माधुरी, अहनिशि इत बरषैयो।
हर्षण सिद्धि बचन सुनि रघुवर, चित्त चोर चित चैयो॥

(८०२)

सिद्धि कुँअरि रस वारि हमारी पियारी।
प्राण प्रिया सरहज नव नागरि, रस वर्धनि सुख सारी॥
जगत एक सुन्दरि गुण आगरि, प्रेम मूर्ति प्रिय कारी।
पति प्राणा तिय धर्म धुरीनी, शील संकोच सम्हारी॥
शुचि संगीत कला नैपुण्या, अह मम बिनु हिय हारी।
विरति विवेक सहज बस तोहिं में, निमिकुल की उजियारी॥
तुम कहँ पाय भयो मैं धनि धनि, सुर नर नाग मझारी।
जीति लियो मोहि कहँ बिनु दामहिं, अतिशय प्रीति पसारी॥
हर्षण सिद्धि सदन ते एक पद, कबहुँक टरौ न टारी।

(८०३)

सरहज सिद्धि तू मोरी रसहिं रस बोरी।

सर्वस सौंपि भजी मोहि काहीं, परमा प्रीति विभोरी॥
मम मन मनहिं मिलाय अहं बिनु, मद्गत प्राण कियोरी।
मैं अरु मोर दिहेउँ पै प्यारी, सकुचत आत्मा मोरी॥
तोहिं ते उऋण तोहिं नहिं कबहूँ, सत्य कहौं नृप छोरी।
जन्म जन्म नित नित तोहिं चाहो, श्याल संग सुख सो री॥
आनँद सनि निशि वासर विहरूँ, मिथिला पुर की खोरी।
हर्षण हृदय हेरि हुलसावौं, कुँअर कुँअरि की जोरी॥

(८०४)

प्रभु धनि धन्य तिहरो भाव।
जन जानि देवत मान बहु विधि, रंक करि के राव॥
विधि हरि हरहु जेहिं सेव निशिदिन, राखि रुख चित चाव।
सोइ जानकी पति मधुर मूरति, प्राण प्रिय मोहिं गाव॥
कहँ मैं कहहु कहँ कौशल धनी, जुग्नु रवि दरसाव।
निज मानि सरहज मोहि पोषहु, छोड़ि प्रभुता ठांव॥
प्रिय प्रणत पालक दीनबन्धु, विरद बड़पन नाव।
गुनि दासि सिद्धिहिं रक्ष हर्षण, सेव पद की पाव॥

(८०५)

सिद्धि सियाते नेह पसारी बोली बैन विचारी है।
लली कृपा की मूरति लोनी, तुम सम अतिशय भयी न हो नी॥
रती रमोमा शची शारदा, त्रिभुवन तिय बलिहारी हैं।
रस की खानि रसिक संजीवनि, प्रेम पियूष परम प्रिय पीबनि॥

रस वर्धनि रसिका रघुराजहिं, रसहिं रमावन वारी हैं।
एक गती मोरे तुम अहहू, पिय के पन्थ सदा मोहिं बहहू॥
युगल किशोर पाय नित सेवा, पागौं प्रीति अपारी है।
तव मुख देखि जिऔं जग माहीं, भव सुख छोड़ि छुआ छल नाहिं॥
तिहरे भैया संग सदा मैं, हर्षण रहूँ तिहारी है।

(८०६)

प्राण प्रिया तैं भाभी सलोनी।
भैया संग देखि तोहि हर्षों, सुख सम्वर्द्धनि दुख की खोनी॥
हिय में बसहु प्रिया के दूनहु, जानहु मैं सत्यहिं रस बोनी।
बिके अहहिं रसिया रघुनन्दन, दम्पति प्रेम विवस जग जोनी॥
नेत्र विषय गुनि प्राणन प्राणा, अर्पे सर्वस प्रीति अहोनी।
तव सुख सुखी चलहिं रूख राखी, भूलि अपनपौ सुख के भौनी॥
तैसहिं मोहिं गिनहु सब विधि ते, वारि दियो तोहिं आत्म अयोनी।
हर्षण सिय के वचन श्रवण करि, सनि सुख सिन्धु सिद्धि भइ मौनी॥

(८०७)

युगल किशोर किशोरी हरत हिय हमरा।
पुरवहु आस अथोरी अहो दृग दियरा॥
श्याम गौर घन दामिनी शोभा, बने न कहत देखि मन लोभा।
भूषण भानु अँजोरी पहिरि पट पियरा॥
मुसुकनि मधुर सुधा रस वर्षति, चितवनि चारु चतुर चित कर्षति।
जुलुफैं जुलुम करोरी जकरि जन जियरा॥

बोलनि मधुर सुमन शुचि झारत, प्रेमिन परसत प्रेम प्रसारत।
बर्षत रस चहुँ ओरी, पियै जन धियरा॥
भैया भवन बसै दोउ हर्षण, सेवै सिद्धि सकल सुख सरसन।
देखौं दृगन विभोरी, रहौ नित नियरा॥

(८०८)

झाँकी श्री युगल किशोर की।
कोटि मदन रति वारत जापै, शोभा सब सिरमौर की॥
सिद्ध सदन सिंहासन सोहति, सुन्दर श्यामल गौर की।
छत्र चमर लै सखियन सेवित, सेवा साज अथोर की॥
वाद्य बजत प्रमदागण गावहिं, नृत्यहिं नवल विभोर की।
किन्नरि औ गन्धर्वि अप्सरा, सुख सुषमा रस बोर की॥
समय समय सब सारी सरहज, रिझवहिं जन चित चोर की।
हर्षण हास विलास प्रवीनी, प्रेम पगी छल छोर की॥

(८०९)

मुसुकनि मन अरुझानी ललन तोरी।
जो जो लखे ललित सुख सारहिं, विवस भये भव मौनी॥
अरुण अधर अमृतहिं प्रकाशति, मधुर मधुर मधु दोनी।
बीच बीच विकसति दन्तावलि, दाड़िम द्युति की खोनी॥
विधुकर निकर विखरि आभासति, विहँसनि रस की भौनी।
राउर मूर्ति ताहि ते सुन्दरि, शत शत शशिहिं लजोनी॥

ननँद भाग को वरणि सिरावै, जाहि सुलभ छवि छौनी।
हर्षण सिद्धि वचन सुनि रघुवर, मुसुकि हर्यो हिय लोनी॥

(८१०)

अँखियन ते तेरे अहो अँखियाँ हमारी।
प्रीति करी मन बुद्धि अगोचर, निबहब केवल कृपा तिहारी॥
अमृत भरी नेह नव पूरित, जीव जियावन महिमा अपारी।
दया दृष्टि देखहिं जेहिं ओरी, बनत सो भूषण भुवन मझारी॥
चितवनि वशी करणि मन मोहनि, भागत भव भय भाल ते भारी।
सुख संवर्धनि प्रेम प्रदायिनि, कृपा मई निज नयन निहारी॥
कंज खंज मृग मीन लजावनि, बड़री कजरी कोरन वारी।
हर्षण सिद्धि की परतम प्यारी, सुन्दर श्वेत श्याम रतनारी॥

(८११)

घूँघर वारी ये अलकै तेरे सिर सोहनी।
अतर भरी कारी गभुआरी, छूटि कंध पै छलकै मदन मन मोहनी॥
मुख सरोज मकरन्द पियन हित, अलि सम कहुँ कहुँ चलि कै छहर
छवि छोहनी॥
रसिकन रसहिं बढ़ावन वारी, हर्षण हठि हिय अलकैं सुमिरि
सिधि जोहनी॥

(८१२)

सिद्धि सखिन सँग मीला हो सबैं सिया रघुराज।

आनँद लै उपजावति, पिय प्यारी के मन महँ भावति,
करति विविध विधि लीला हो, प्रेम विभोरी विराज।
रसवर्धनि रस रूप किशोरी, रसिकेश्वर रघुवर रस बोरी,
रंगि के रंग रँगीला हो, सरहज सुख की साज।
जात निमिष सम दिन अरु राती, प्रीति रीति नहिं वरणि सिराती,
नव नव नेह मदीला हो, सेवक सेव्य समाज।
विछुरन छनहु कोउ नहिं चाहें, इक इक सुख के हेतु प्रवाहैं,
धनि धनि दिव्य वसीला हो, हर्षण जग के जहाज।

(८१३)

कहे को भाई श्याल भाम की प्रीति।
जहँ न जाय मन विधि हरि हर को, मन बुधि वाक अतीति॥
बसे परस्पर बहिर्प्राण दोउ, चाह स्वसुख सब जीति।
इक इक बिनु आत्महु नहिं चाहैं, सहज सनेही नीति॥
देखि परसि एक एकहिं हर्षै, तउ प्यासे चित चीति।
मिले रहत पै अबहिं मिले जनु, नहिं अघात मधु मीति॥
कहुँ कहुँ पगत प्रेम वैचित्रहिं, विरह शंक भय भीति।
श्याम गौर भे एकहिं हर्षण, रसाद्वैत रस रीति॥

(८१४)

पलँग बैठि मोहे निमिकुल के कुमार है।
रामहिं लै अंक आज, हृदय लाय बहुत भ्राज, श्याम गौर छटा छाय
जमुन, गंग सोहे शोभा के अगार हैं।

परमैकान्तिक सुहान, प्यार सेवं सुखहिं सान, पी पियायरसहिंछान,
दृगन देखि दोहे सुख सुषमा श्रृँगार हैं।
संभव कहुँ हो वियोग, सुरति करत भरे शोग, मुरछि परे विरह भोग,
युगल कुँअर मोहे बिचित्रता अपार है।
हाय सखे हिचक कहत, नयन अश्रुधार बहत, छोड़ गये कहाँ रहत,
तपत लाल लोहे हा उर तो हमार है।
तेहिं बिच तहँ सिद्धि आय, साधन करि दिय जगाय, ललकि मिले,
दोउ सुभाय, परम प्रीति पोहे हर्षण हिय के हार हैं।

(८१५)

एकहिं एक कहत हम तिहरे।
देह प्राण सुख लौकिक वैदिक, तुम बिन चाह न हमरे॥
राउर बिन आत्महु नहिं आरसैं, शत शत खण्डहिं बगरे।
तव सुख है सुख साचों मेरो, इच्छहिं इच्छा पगरे॥
दुइ के एक एक दुइ होइ के, लीला ललिता लगरे।
प्राण प्राण जिव जीवन सत्यहिं, दरश बिना दुख दगरे॥
नयन ओट नहिं कीजै हम कहँ, ओट होत जग ठगरे।
हर्षण हिय की हेरि कही हम, उर बिच धारहु रँगरे॥

(८१६)

बतियाँ करैं मधु घोर, कुँअर कुआँरी पगे।
शील स्वभाव बरणि सौलभता, कहहिं कथा रस बोर॥

चन्द्र कीर्ति सुख रूप सलोने, सिय रघुवर चित चोर।
सहित त्रिदेव त्रिदेविन पूजित, सम अतिशय नहि और।।
सुर नर मुनि भरि भाव भुलाने, पागे प्रेम विभोर।
सो प्रभु प्रभुता तजिके सिगरी, हमहिं तुमहिं कह मोर।।
केवल कृपा भलाई अपने, कियो भुवन सिरमौर।
विहरत विवश संग हिय हर्षण, सेवहिं तेहिं छल छोर।।

(८१७)

सेवत जनक सुनैना मुदित मन।
भाव भरे वात्सल्य प्रपूरित, प्रेम पगे चित चैना पुलकि तन।।
जिय की जान जानकिहिं जानत, सर्वस प्रभु सुख दैना गिनहिं धन।
जेहि विधि सुखी रहहिं दोउ वारे, सदा सम्हारत तौना छनहिं छन।।
लली लाल मुख विकसित लखिके, परम प्रसन्न बुझैना सुखहिं सन।
राज काज गुनि सेवा सारत, बढ़त नेह दिन रैना घनहि घन।।
पुर-परिवार सकल नर नारी, मानत तिमि छवि छैना गुणहिं गन।
हर्षण विहरत मिथिला प्रभु के, उतरेउ आनँद ऐना जनहिं जन।।

(८१८)

कछु दिन रहि पुनि अवध सिधारे।
नृपति किशोर विदेह किशोरी, सहित समाज सबन्ह सुख सारे।।
यहि विधि आवत जात युगल वर, युगल पुरी के प्राण पियारे।
हर्षण लीला ललित लखावहिं, चित्त चोर हिय हरण हमारे।।

(८१९)

बिहरत अवध आनँद कन्द।

स्वर्ण सदन शोभित सिय संगे, वितरत परमानन्द॥
सखा सखी शुचि दास दासि ते, सेवित रघुकुल चन्द।
रस रूपी रसिकेश्वर रघुवर, सबहिं भाँति स्वच्छन्द॥
चन्द्र कीर्ति रस बर्धन रसिया, पियति प्रेम मकरन्द।
मधुर मधुर मूरति मन मोहनि, लखत मिटत दुख द्वन्द॥
जननि जनक परिजन पुरवासी, परे प्रीति के फन्द।
सोइ संयोग करहिं प्रभु हर्षण, रहैं सुखी जन बृन्द॥

(८२०)

दिन चर्या मुनिन मन भावनी।

वेद वेद्य सिय रघुवर केरी, चरित चन्द्रिका पावनी॥
श्रुति की सार सन्त सत सम्मत, आत्म सार दुख दावनी।
रस बर्धनि रसमई निर्मला, अकलंकित छवि छावनी॥
सुधा पूर्ण इक रस सुख दायिनि, लोक प्रिया गुण गावनी।
निज कर निकर प्रसारि त्रिलोकहिं, आनँद अमित बढ़ावनी॥
सुर नर नाग जीव जड़ चेतन, करति पुष्ट लव लावनी।
हर्षण अष्ट याम नव उदिता, परम प्रेम उपजावनी॥

(८२१)

ब्रह्म महरत मोद मयो सजनी।

कलरव करत शकुन निज नीड़हिं, तिमिर तोम कछु दूर भयो॥

चिन्तन लागे ब्रह्म मुमुक्षुहु, सन सन निशि को शोर गयो।
उचरत वेद बिप्र करि संध्या, ठाकुर पूजा सबहिं कयो।।
भैरव राग श्रवण सुख सरसत, गायक गुणि गण गाय दयो।
बजन लगी नौबत नव द्वारे, आनँद उमड़त उर उनयो।।
जाय प्रवोधहिं युगल किशोरहि, दरश देहिं जय जयति जयो।
हर्षण सुख के सिन्धु समावहि, परिकर वृन्द पियूष पयो।।

(८२२)

चन्द्रकला अलबेली सखिन सिर मौर।
समुझि प्रात अलिगण लै पहुँची, नागरि नवल नवेली महल की पौर।।
भूषण बसन सजे सब सुन्दरि, शोभा सकल सकेली रसहिं रस बोर।
रती रमा शत शारद गिरिजा, लाजहि लखत सहेली कहहिं का और।।
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं, मुनियहु ध्यान पछेली श्रवन सुनि शोर।
विविध वाद्य धुनि नृत्यहिं नवला, सुख की धार बहेली मधुर मधु घोर।।
भैरव राग अलापहि गावहिं, सबही प्रेम पुतेली स्वसुख सब छोर।
पिय प्यारी जागहिं सुनि हर्षण, करहिं यत्न मन मेली चषन चित चोर।।

(८२३)

उठहु उठहु लली लाल भोर भयो सुख के सुख सारे।
अरुण शिखा करत शोर, पंछी चहचहात जोर, मनहु कहैं भयो भोर
मुनियन मन हारे।
चकई पति मिलन जात, उडगन कछु मलिन भात, तमहू कछु कम जनात,
जागे जग वारे।।

हरिजन जन जाग जाग, भजन भाव करन लाग, प्रेम पगे भरै राग,
भैरव झनकारे॥
बाजत नौवत दुआर, मोहतमुनि मन विचार, सुनहु सुनहु अतिपियार,
हर्षण हिय हारे॥

(८२४)

जागिये युगल जग के नयन।
दशरथ नन्दन जनक नन्दिनी, प्राण प्रिय सुख दयन॥
भोर भयो पंछी वन बोलैं, द्वार नौवति वयन।
शुक सारिक पाले यश वर्णत, प्रात गुनि चित चयन॥
परिकर वृन्द दरश तव चाहत, प्रीति पगि रस अयन।
अलिगण मुदित भैरवी गावहिं, जानि बीती रयन॥
सुरभी सम्मुख शयन कक्ष के, दर्श हित तव हयन।
आह्निक कृत्य करहु अब हर्षण, समय शुभ को लयन॥

(८२५)

भोर भयो जागहु पिय प्यारी।
लीला ललित करहु दैनंदिनी, रसिकन रसहिं बढ़ावन वारी॥
सखी सखा सब दासी दासा, हर्षहिं जननि जनक मुद कारी।
हर्षण हेरि सबहिं सुख सानैं, जड़ चेतन जन के दृग तारी॥

(८२६)

प्रातकाल दोउ जानि जागिये, रघुवर जनक दुलारी।
अरुण चूड़ वर बोलन लागे, समय सुहावन भारी॥

शीतल मन्द सुगन्ध वायु बह, आयु बढ़ावन वारी।
ब्रह्म विदन कहँ ब्राह्मी बेला, ब्रह्म रमावन हारी।।
तेहि ते ब्रह्महिं चिंतन लागे, ब्राह्मण ब्रह्म पुजारी।
श्रवणन श्रुति को शोर सुनावत, सुभग शुभद सुखकारी।।
नित्य कर्म हित चारहु आश्रम,चार वरण नर नारी।
हर्षण हर्ष उठे तजि आलस, जागे जगत मझारी।।

(८२७)

जागे युगलकिशोर भोर भये।
आलस भरे उनींदे नयनन, झुकि सम्हलत चित चोर।।
अँग अँगड़ाई लै जमुहावत, लोचन लखत न और।
विथुरे केश कलित मुख ऊपर, झर रही केशर खौर।।
नृत्य गान वर वाद्य अलिन कृत, सुन्यो श्रवण शुचि शोर।
उघरत आँख लखे एक एकहिं, पेखतहिं बने विभोर।।
दुई के एक भये पुनि दोऊ, लिपटि रहे रस बोर।
अमृत मय अनुपम सुख शोभा, कौन कहे मति थोर।।
हर्षण झीने पट अन्तर ते, लखैं सखी तृण तोर।

(८२८)

प्रात समय श्री लाड़िलि लाल जगे।
उठ बैठे कंचन पलका पै, पै नहिं नींद भगे।।
कबहुँ पिया प्यारी के अंकहिं, ओढ़ के ऊँघ रँगे।
कहुँ प्यारी पिय के उर लगि कै, कन्धहि कंठ पगे।।

सोवत जागत उठि पुनि पौढ़त, आलस अतिहिं लगे।
करि पुनि यत्न बैठि दोउ दिलवर, श्यामल गौर सगे॥
हिय को हिय गल को गल दै कै, पृष्ठहिं पानि लगे।
हर्षण प्रेम पगे जमुहावहिं, नहिं प्रकृतस्थ ढँगे॥

(८२९)

जागे जानकि जीवन जनक दुलारी।
श्यामल गौर वपुष वर मंचहि, घन दामिनी द्युति कारी॥
प्रात: पाणि दर्शन विधि करहीं, अग्र मूल मधि तारी।
रतनारी अलसानी अँखियन, मीजहिं हाँथ विचारी॥
मूँदत उघरत पुनि पुनि लोचन, यद्यपि करत सम्हारी।
वसन विभूषण केश जहाँ तहँ, बिगरे शयन मझारी॥
लज्जा विवश सम्हारि परस्पर, नयनन नेह निहारी।
हर्षण लिपटि रहे मन भावन, आलस टरत न टारी॥

(८३०)

सुनि नूपुर की झनकारी युगल वर जागे।
बार बार जमुहात झाँपि दृग, प्रीतम प्राण पियारी॥
ह्वै चैतन्य कछुक भरि आलस, एकहिं एक निहारी।
मिले परस्पर प्रात विधिहिं ते, मधुर मधुर मधु वारी॥
चन्द्र वदन निरखन नहिं देवति, नींद शयन सुखकारी।
महती हानि करति यह प्यारी, बोले अवध विहारी॥

मुसुकि जनकजा मन हरि लीन्ही, सखियाँ सुनहिं सुखारी।
जागे जानि स्वामिनी सिय वर, हर्षण पर्दा टारी॥

(८३१)

प्रिया प्रीतम की झाँकी झलाकि गई रे।
भोर भये अन्तर पट टारत, पलके पै चख में चमाकि चई रे॥
अलियन हृदय नेह नव छायो, भीतर के भवनै झमाकि गई रे।
नृत्यहिं नवल नवेली छुम छुम, नूपुर के शोरौं सुधा कि तई रे॥
क्रमशः पगन परि भरि भावहिं, प्यारी औ पिय की सुताकि भई रे।
करि स्पर्श सबहिं सुख दीने, शुचि सखियाँ सबै छबि छाकि पई रे॥
आरति करि बहु लीन बलैया, कहि कहि जय जय सब सुख बाँकि लई रे।
हर्षण विनय करी कर जोरे, बाहर के कक्षहिं सुझाँकि दई रे॥

(८३२)

पिय प्यारी उठे तजि के पलका।
श्वास विचार धरे पद प्रथमहिं, महिहिं प्रणमि श्री नृप के बलका॥
चरण पीठ धारण करवाई, अली परश लै पद के तलका।
दै गलबाहँ चले अलसाते, लाल लली दृग फल के ढलका॥
छत्र चमर विंजन सिर सोहत, छाजत छहरत छबि कै छलका।
भैरव राग तान सखि लै के, करहिं नृत्य रव श्रुति के फलका॥
सखिन बीच दोउ कुल के चन्दा, कोटि काम-रति मद के दलका।
राजि रहे हर्षण हिय हारे, लखतउ लोचन लभ के ललका॥

(८३३)

झूमत आवैं युगल अलसाने, आली लखो इक एक लुभाने।
अंस परस्पर भुज सम्मेली, नेह नहे दोउ नवल नवेली॥
रस की धार बहाय भली री, सखियन संग सुभग सरसाने।
शयन कक्ष रस-केन्द्र मनोहर, तहँ ते आवत दोउ यशोधर॥
रस रूपी रसिकेश रसिक वर, रस वर्धन रस राज रसाने।
वितरत आनँद अलिन समाजा, सुख सुषुमा श्रृंगार विराजे॥
मधुर मधुर मन मोहत हर्षण, छहरत छबिहिं मोहन मति वाने।

(८३४)

सुरभी दर्शन किए मुदित री।
राम रसिक सह सिय सुकुमारी, पानि परशि जिय जिये।
भोजन दै तेहिं पूजि प्रेम ते, दीन्ह मुनिन पय पिये॥
हर्षण हर्षि हिंडोरहि बैठे, आलस पनहिं लिये।

(८३५)

पिय प्यारी दोउ झुलत हिंडोर।
मन्द मन्द झुलवहिं अलवेली, पगि पगि प्रीति अथोर॥
नृत्य गान वर वाद्य मधुर मधु, भयो रसहिं रस बोर।
हर्षण आलस त्यागि चले दोउ, बल्लभ कुञ्ज की ओर॥

(८३६)

करत दोउ सोहैं दँतवन भली।
रतनन चौकी बैठि प्रहर्षत, आस अलिन की अतिशय फली॥

सखिगन सररसि सेव में ठाढ़ी, सजि सजि साजहिं सबहीं कली।
दै मधुपर्क पान पुनि दीन्हीं, गंध लगाय के पद तल मली॥
बल्लभ आरति क़रि पढ़ि मंगल, कहहिं जयति जय बलि बलि बली।
प्रेम पगे बतराय मधुर मधु, करि के कृपा श्री लाल लली॥
हर्षण सुखी किये रस वर्षी, हर्षी हृदय कल कुंजन कली।

(८३७)

चले कुंज स्नान युगल मन मोहन।
सोहत सखिन मध्य रस बर्षत, उडगन बीच महान सोम दुइ सोहन॥
प्रीतम प्रिया करत कछु बातैं, देखत चन्द्र कलान भले भरि छोहन।
सखिगन सनी सुखहिं सरसावहिं, नाचहिं गीत विधान यथा आरोहन॥
मधुर मधुर बाजत वर बाजै, पहुँचि गये रस खान रसहिं रस दोहन।
आरति करी कुंज की आली, प्रेमहिं पगी भुलान राग भय कोहन॥
भावहिं भरी भाग भलि मानी, नख शिख शोभ सुजान दृगहिं भरि जोहन।
हर्षण हृदय हेरि रे जियरा, सेवहु दम्पति मान सदा लखि भौंहन॥

(८३८)

सखियाँ सिय तनु तेल लगावहिं।
सो सुख कहै कौन बिनु अनुभव, जहँ मन वाक न जावहिं।
तैसहिं पिय के पृथक कक्ष महँ, अली फुलेल रमावहिं॥
विहँसि बदन कछु कहि दृग चंचलि, निरखत नाथ मोहावहिं।
अनुपम अंग परशि बिनु वस्त्रहिं, सुख के सिन्धु समावहिं॥

जकि सी ठगि सी कहुँ प्रिय तन की, लखि ललिताई लोभावहिं।
हर्षण सर्वस दान दुहुँन ते, पाई पिय के भावहिं॥
सुठि सौन्दर्य माधुरी स्वादहि, जेहि शिव ध्यान न पावहिं।

(८३९)

रहे नहाय नवल दोउ रसिया।
निज निज कुंज तीर्थ जल माहीं, तीर्थ भूत पद पय जेहिं लसिया॥
पृथक पृथक अलियन ते सेवित, मोहत मनहिं मधुर मधु असिया।
मधुर मधुर मलि बदन पिया को, लेत रसहिं सबहीं शुचि दसिया॥
अंग पोंछि सखि बसन समर्पी, पुनि पद त्राण लखत चित फँसिया।
पहिरि पीताम्बर यज्ञ कुंज कहँ, चले युगल हर्षण हिय बसिया॥

(८४०)

यज्ञ पुरुष यज्ञेष यज्ञ मय सोहे सही।
यज्ञ कुंज के बीच कहौं का मोहे मही॥
तिलक स्वरूप किये सिय रघुवर, नित्य नेम में पागे तहीं।
आत्म-यज्ञ अरु ब्रह्म-यज्ञ सत, प्रेम-यज्ञ महँ रागे रही॥
द्रव्य-यज्ञ स्वाध्यायादिक करि, तेज पुंज दोउ राजे वहीं।
विप्र-धेनु-सुर-संत पूजि पुनि, परमानन्द समाजे बही॥
जननि जनक पिय सास-ससुर सिय, पूजि परम सुख साजै सही।
अहंकार ममकार बिना विभु, भव के भाव भुलाने नहीं॥
प्रेम पगी पति पूज पुनः सिय, पिय को प्यार लोभाने लही।

अलियाँ चली लिवाय दुहुँन कहँ, कुंज श्रृंगारहिं गाते चही॥
हर्षण पंथ जात छबि छहरत, यज्ञ मई का बातैं कही।

(८४१)

कुंजेश्वरि किय आरती, छत्र चमर सिर ढारती।
छबि छहरति सुख सारती, दम्पति प्रेम प्रसारती॥
शोभा सुठि श्रृँगार सदन की, वारै तहँ करतूति मदन की।
जहाँ रमैं रस राज महोदधि, झरना झर झर झारती॥
तहँ सोहे सिंहासन भारी, तापर बैठे प्रीतम प्यारी।
सुख सुषुमा श्रृँगार की मूरति, रसिकन रसहिं सम्हारती॥
निरखहिं अली रसहिं रस बोरी, खड़ी सेव में चारहुँ ओरी।
युगल कृपा को पाय प्रहर्षी, वर्षि सुमन जय कारती॥
चाहैं कीन श्रृँगार सुहावन, लखि के लोचन ललित लुभावन।
तृप्त न होहिं तबहुँ लखि जोरी, हर्षण के हिय हारती॥

(८४२)

सखियाँ सिय को श्रृँगार रही।
नख ते शिख लौ वसन विभूषण, रुचि रुचि के संभार सही॥
अंगराग पद लाली रचि के, नयनन को सुख सार लही।
कनकाङ्गी कनकोज्वल कमला, कमल की गंध प्रसार मही॥
चन्द्रबदनि श्री चर्चित चन्दनि, चम्पक वरणि विकार नहीं।
शोभा सकल सुदेश अनूपी, महिमा महिमा पार कही॥

उमा रमा रति शारद शशि शत, नख द्युति में तन वार चहीं।
हर्षण हेरि हरषि हिय अलियाँ, प्यारी को हिय हार रहीं॥

(८४३)

प्रिया प्रीतम सिंगारी सहेलियाँ। (हाँ हाँ हाँ)।
नख शिख सजीं प्रीति भ़रपूरी, परसति बदन हथेलियाँ॥
शोभित शुचि सर्वाङ्ग अनूपम, वसन विभूषण मेलियाँ।
छहरति छटा चुअति भुँइ ऊपर, जग जग ज्योति जगेलियाँ॥
भहर भहर भल भवन प्रकाशत, शीतल सुखद सुभेलियाँ।
रसमय लाल रसहिं मय लाड़िलि, रस की धार बहेलियाँ॥
मूर्ति मधुरिमा मधुमय मोहनि, शोभा सकल सकेलियाँ।
जानहिं अली भले विधि हर्षण, युगल कृपा करि केलियाँ॥

(८४४)

सखिन बिच सोहत लाल लली।
श्याम सरोज समेत लसत जनु, कनका कमल कली॥
स्वर्ण सिंहासन सज्जित सोहे, सेवहिं अमल अली।
बाल भोग करवाइ पान दै, गंधहु पदहिं मली॥
छत्र चमर वर विंजन ढारत, आरति कीन्ह भली।
मंगल स्तव पढ़ी प्रीति ते, जय जय प्रणत पली॥
दै पुष्पाञ्जलि लीन्ह बलैया, हर्षित हृदय हली।
हर्षण निरखत नयन लोभाने, नव नव नेह बली॥

(८४५)

श्रृंगार कुंज के बीच पिया प्यारी।
बैठे परम प्रीति रस साने, गल बहियाँ दोउ डारी॥
चितय रहे एक एकहिं सरसत, मुसकनि मधु रस झारी।
झाँकी युगल निहार अली सब, बार बार बलिहारी॥
नृत्य गान संगीत सुधा सम, वर्षन लगी विचारी।
जेहि ते लहै प्रमोदहिं दम्पति, सेवा सोइ हमारी॥
सुनि सुख मानि सहज दोउ दिलवर, सब पर कृपा प्रसारी।
हर्षण हर्षि निहाल भई सखि, नव नव नेह अपारी॥

(८४६)

रिझवहि प्रीतम प्यारी कला उजियारी।
चन्द्रकला सिरमौर सखिन में, रसहिं बढ़ावन वारी॥
वीण बजाय के राग अलापति, पंचम स्वर सुखकारी।
अंगुली फेरि स्वरन झंकारति, चित्ताकर्षन हारी॥
सुनत सुखहिं सिय रघुवर पागत, को हम कहाँ विसारी।
भानु सुता मुख निसृत अनुपम, श्रवण द्वार संचारी॥
शुचि संगीत सुधा रस पीवत, प्रियतम प्रेम पुजारी।
हर्षण जड़ चैतन्य मगन भे, रसमय राग की धारी॥

(८४७)

वर्षा वर्षे झरी लागि जोर।
सदन श्रृंगार गगन में उनये, राम श्याम घन घोर॥

श्री सिय विद्युत चितवनि मुसुकनि, गरजनि गुनि रस बोर।
अलि मन मोर नवहिं नव नृत्यत, बुधि पिक कुहकत शोर॥
परमानन्द परम प्रिय पावस, छाई हियहिं हिलोर।
परिकर शालि छनहिं छन वर्धति, हेतु रसिक मुख कौर॥
लखि लखि रसिक रसिकनी हर्षैं, समुझि भोग भल मोर।
हर्षण सुख समृद्धि कहौं का, चित्त हर्‌यो चित चोर॥

(८४८)

सोह रहीं सखि चारहुँ ओरी।
चन्द्रकला अरु चारुशिलादिक, हेमा छेमा रस की बोरी॥
पद्म गंधिनी मदन मंजरी, वरारोह लक्ष्मणा सु गोरी।
सुभगा सुषुमा सत्या चन्द्रा, चन्द्रप्रभा चित्रा चित चोरी॥
कमला विमला नित्या विद्या, श्रद्धा योगा क्रिया सु ठौरी।
सुन्दरि शुभ शीला गुण शीला, अति शीला कर्षिणि सुख सोरी॥
ईशाना वाणी रस वर्षिणि, प्रेमा परा विराज विभोरी।
सखि समूह लै सेवा साजहिं, सेवहिं हर्ष किशोर किशोरी॥

(८४९)

पिय प्यारी को सेवैं सखी रस बोर।
छत्रहिं लै लक्ष्मणा सु सेवति, सहज प्रीति कैंकर्यहि धेवति,
अनुगामी सो पीछे खड़ी बनि भोर।
चन्द्रकला लै चमर चलावति, छन छन नवल नेह अनुभावति,
रसपागी सों दक्षिण दिशा चित चोर।

सुभगा लै विंजन हिय हर्षति, सेवा सों सब के चित कर्षति,
भव भूली सी शोभे सो बायीं ओर।
चारु शिला आगे गुण गावै, दम्पति को भरि भाव रिझावै,
हिय हारी सी वीणा बजाय विभोर।
कोणादिषु बहु अली विराजहिं, षट प्रकार जे अहैं समाजहिं,
दृग प्यासी सी निरखैं किशोरि किशोर।
कोउ दर्पण कोउ पानहिं लीन्हें, कोउ माला चन्दन रस भीने,
कोउ कुंकुम लै कोऊ गंध की ठौर।
कोउ नृत्यहिं कोउ वाद्य बजावहिं, गान कला नैपुण्य दिखावहिं,
दोउ रीझे से हर्षे हर्षण हिलोर।

(८५०)

बाहर कक्ष गये जगवन्दन।
सहित सखिन सिय ते पिय पूंछी, हिल मिलि राम रसिक रघुनन्दन।
अनुज सखा शुचि सेवक भेंटे, प्रेम पगे उर मेलि स्वछन्दन।
सबहिं सुखी भे लखि निज नाथहिं, दासन देखि सुखी सुख कन्दन॥
सुभग सुआसन सबहिं विराजे, निज निज के अनुरूप अमन्दन।
बीड़ा गंध माल व्यवहारहु, भयो भाव भरि हिय हित चन्दन॥
बातैं मधुर मधुर रस वर्षति, भ्रात सखा सँग भई अद्वन्दन।
हर्षण सभा कुंज प्रभु गवने, लिये संग निज परिकर वृन्दन॥

(८५१)

सभा सदन में पहुँचि श्री चारों भैया।
पितुहिं प्रणाम किये हिय हर्षित, प्रेम वारि दृग लैया॥

कुल गुरु सहित मुनिन तस वन्दे, पाइ प्यार पुलकैया।
अंक लिये दशरथ बहु प्यारे, प्राणन प्रिय रघुरइया॥
नृप समीप सोहे सुत चारहु, भहर भहर छवि छइया।
सुर नर मुनि गंधर्व विलोकहिं, नयन नेह चित चैया॥
मागध सूत बन्दि गुण गायक, वरणि विरद गुण गैया।
हर्षण हर्षि अपसरा नाचहिं, भाव भरी सुख दैया॥

(८५२)

बहि गै रे सत संग सुधा की धारी।
पी पी मगन भये सुख साने, जो कोउ रहे राम दरबारी॥
कर्म योग गरु ज्ञान की गाथा, प्रेमाभक्ति परम सुख सारी।
माया जीव ईश परमारथ, वरणे मुनिवर विमल विचारी॥
राम सिया यश मय संगीतहु, प्रेम प्रवर्धन मंगल कारी।
सुख के सिन्धुहिं सबहिं डुबावन, भयो मधुर चित कर्षन हारी॥
मधुर वाद्य झनकार झमकि के, नृत्य करीं सुर पुर नव नारी।
हर्षण आनँद आनँद एकहिं, छाय रहेव सब सभा मझारी॥

(८५३)

मोरे महराजा मुकुट मणि धन्य।
तुम सम भयो न है नहिं होवन, सुर नर मुनि मधि कोऊ अन्य॥
राम लखन अरु भरत शत्रुहन, जायो सुत जो हैं जग जन्य।
सिय श्रुतिकीर्ति उर्मिला माण्डवि, लही पतोहू पति की अनन्य॥
विधि हरि हर सह शक्तिन सेवित, पुत्र वधू भुवि मँह अति मन्य।

सुख सुषुमा श्रृँगार के सिन्धू, कोटि काम रति लागत तन्न॥
मधुर मधुर मन मोहन रसमय, चित्ताकर्षत निज गुण गन्य।
हर्षण जानहिं तत्व के दर्शी, नाहिन भव प्रिय माया छन्न॥

(८५४)

दशरथ ढोटा जनक की ढोटी।
सम अतिशय नहिं कोऊ तिनके, त्रिभुवन चेतन कोटी॥
जस सर्वाङ्ग राम सुठि सुन्दर, कोटि काम छवि छोटी।
तैसहिं सिया शोभ की खानी, त्रिजग तियन की चोटी॥
मधुर मधुर मधुमय मन मोहन, तिमि सिय तनिक न टोटी।
गुणन गेह दोउ कुल उजियारे, सूर्य प्रभा की जोटी॥
चन्द्र कीर्ति प्रिय दर्शन दोऊ, अमृत मय हँस होटी।
हर्षण गावहि गुण गण रमनी, सुनहिं देव नभ ओटी॥

(८५५)

चारु चारों भैया भरे नव नेह।
सभा विसर्जन करि चढ़ि यानहिं, गये कौशल्या के प्रिय गेह॥
आरति करि सो प्यार विविध विधि, अंक लिये अनुपम सुख जेह।
मेवादिक दै पान पवाई, निज कर गंध मली करि नेह॥
निरखि निरखि नयनन भरि नेहहिं, भूली सुधि बुधि सिगरी देह।
पूंछति कहहु सभा की बातें, वरणे प्रमुदित रघुवर तेह॥
अमृत मई मधुर मृदु बानी, सुनत मातु सखियन सह लेह।
हर्षण जननि भवन नित नित्यहिं, रसहिं प्रवर्षत आनँद मेह॥

(८५६)

प्रीतम वाट विलोकति प्यारी।
बाहर ते कब अइहैं प्यारे, कनक भवन अलियन सुखकारी॥
छनहु विरह सहि जात न पिय कर, देवत सिय तन सुधिहिं बिसारी।
रहि न सकति थिर लाज छिपावति, शील सँकोच सनेह सँभारी॥
सखी बोलाय कही लखु द्वारे, का आवत रघुवर रसवारी।
परम प्रीति हिय कहर मचावति, अनुभव गम्य कहै को पारी॥
पुनि पुनि जाति अली फिरि आवति, रामहिं निरखन महल के द्वारी।
हर्षण हिय के हारहिं हेरी, चाहहिं सुख सब रसिकिनि नारी॥

(८५७)

आये तेहिं अवसर रघुनन्दन री।
मातु महल ते पहुँचि स्वसदनहिं, किये सुखी सखि वृन्दन री॥
जनक लली निज पाणि आरती, करि प्रमुदित पद वन्दन री।
हिय सो हिय हर्षाय मिले दोउ, बाँधि युगल भुज फन्दन री॥
मिलनि परस्पर प्रिय प्यारी की, अलियन शीतल चन्दन री।
दम्पति को दै दिव्य सिंहासन, सेई सखि सुख कन्दन री॥
श्याम गौर छवि निरखहिं नयनन, प्रेम पगी बिनु द्वन्दन री।
हर्षण जय जय जनक नन्दिनी, जय जय सुत दश स्यन्दन री॥

(८५८)

नेह भरे नव नागरि नागर।
निरखत नयन परस्पर अपलक, मुसुकि मधुर सुख सागर॥

इक एकन के चिबुक को परसी, प्यारत बदन उजागर।
दै भुजफन्द कपोल सटाये, पियत अधर रस आगर॥
हर्षण धनि धनि प्रीतम प्यारी, सोह सुधा युग नागर।

(८५९)

भोजन शाला चले मन भावन।
दशरथ लाल जनक की लाड़िलि, प्रार्थित अलियन ते छवि छावन॥
कुंजेश्वरि आसन पधराई, प्रेम पगी दुहँ के चित चावन।
पाद्य देइ बैठारि पटन पै, जेहिं पर कोमल वसन बिछावन॥
स्वाद सहित सरयू जल सुख कर, दहिने ओर धराय सुहावन।
परुसन लगीं विविध विधि व्यंजन, सखियाँ उर अनुराग बढ़ावन॥
कोउ कोउ यंत्र लेय अलबेली, लागी गुण गण गारी गावन।
हर्षण अलिन विनय सुनि दोऊ, रस मय रसिक लगे रस पावन॥

(८६०)

पावत भोग पिया अरु प्यारी।
प्रीति पगे मुख कवल परस्पर, देवहिं दोउ हृदय कहँ हारी॥
कहुँ कहुँ हिय छुपकाय पवावहिं, महिमा नेह नवल की न्यारी।
कबहुँ देखि मुख इक इक के रे, मोहत मनहिं कहौं का यारी॥
भोजन भूलि लखत रहि जावैं, पीवत रूप रसहिं सुख कारी।
निरखि सखी अतिशय सुख सानै, मोहहिं मधुर मधुर मति वारी॥
पावहिं और कहँहि दोउ रसिकन, अलियाँ चतुर चितै चित टारी।
हर्षण सुनत सकुचि मुसुकाने, पावन लगे सखिन सुख सारी॥

(८६१)

देखो जेवत युगल रसे रसिया।
प्रीति पगे पिय प्यारी प्रमुदित, व्यंजन विविध चखैं असिया।।
मुसकत मन्द सखिन चित चोरत, मोहत मनहिं फँसै फँसिया।
मधुर मधुर मृदु बोलि सराहत, भोजन स्वाद कहैं कसिया।।
अमृत मय अलियन कर परसो, आनँद दानि अहै जसिया।
सुनत सखी गुनि कृपा युगल की, मानहिं मोद लखहिं लसिया।।
पावहिं और कहत पुनि परसहिं, रुचि अनुकूल लहैं ग्रसिया।
हर्षण दम्पति प्रेम के भूखे, पाये प्रेम पगी दसिया।।

(८६२)

मातु महल कहुँ भोजन पावत।
अनुज सखा सब सँग महँ लीन्हें, परसति जननि सनेह बढ़ावत।।
कबहुँ पिता सँग जेवत सोहत, निरखि नृपति सुख सिन्धु समावत।
कबहुँ समाज के बीच बिराजी, रस मय राम रसिक रस खावत।।
कहुँ गुरु सदन अरुन्धति करते, पावत प्रेम प्रसाद सुहावत।
कहुँ प्रार्थित सचिवन गृह गवनी, सुख के सरितहिं सबहिं डुबावत।।
यहि विधि प्रभुता तजि रघुनन्दन, प्रीति परख प्रेमिन पुलकावत।
हर्षण हृदय हर्षि जन सेवित, स्वयं सरसि सब कहँ सरसावत।।

(८६३)

अहो अचवन दई अलबेली अली।
श्री सरयू शुद्धोदक सुख कर, सुठि सुगन्ध द्रव मेली भली।।

पाणि पाद मुख धोय युगल वर, पोंछि प्रोक्षणी ऐली थली।
हर्षण बैठि पान को पाये, पिय प्यारी किय केली कली॥

(८६४)

पावत पान सहज सुख सागर।
अलियन दीन वीर्य बल वर्धक, प्रेम पगे लै नागरि नागर॥
विविध सुगंधित परे मसालन, सुख कर स्वाद सुधा सम लागर।
हर्षण गमकि गयो सब ओरहिं, हर्षी सखियाँ सुख में पागर॥

(८६५)

इतर करावति घ्राण अली एक।
कोउ शुचि सुमन सुगन्धित स्त्रग लै, पहिरावति सुख मान॥
कोउ लवंग कोउ देत लाँयची, कोउ पबावति पान।
कोउ लिय चमर छत्र कोउ विंजन, कोउ छड़ी छबि खान॥
कोउ दर्पण कोउ चरण पादुका, अलि लै अधिक सुहान।
चन्द्रकला लखि लली लाल की, मंद मंद मुसकान॥
आरति करी भूलि तन काहीं, प्यारी प्रीतम ध्यान।
हर्षण निरखि सखिन सुख दीन्हें, जानकि जीवन जान॥

(८६६)

दै गलबाहीं चले दोउ रसिया।
चर्वित पान अधर अरुणारे, मन्द मन्द मुसुकाहीं॥
ललना गण के बीच विराजत, चितवनि चित्त चोराहीं।
पहुँचि गये विश्राम कक्ष महँ, सखियाँ सुख न समाहीं॥

ललो लाल पलका पै बैठे, मगन भये रस माहीं।
अलिगन वाद्य बजाइ मधुर मधु, मधुर मधुर गुण गाहीं॥
मधुर मधुर सुनि प्यारी प्रीतम, मधुर मधुर बतराहीं।
हर्षण आलस भरि दोउ पौढ़े, परदा पड़्यो छन ताही॥

(८६७)

करति प्रतीक्षा प्यारी शयन के कुंजन।
जननी भवन भोजन करि लौटहिं, राम रसिक रस वारी॥
पियहिं देखि पलका उठि भेंटी, रसिका राम दुलारी।
दोउ भुज मेलि हृदय हिय लैके, सुखी भई सुख कारी॥
निज कर पान पवाई पिय कहँ, परमा प्रीति पसारी।
पुनि पुनि करि अलिंगन चुम्बन, बढ़य दीन रस धारी॥
दै गलबाँह प्रिया अरु प्रीतम, सोहे पलँग मझारी।
आलस भरे जानि सखि हर्षण, अन्तर पट दिय डारी॥

(८६८)

करन लागीं आरती सखि शयनी।
प्रीति पगे पलका पै पौढ़े, राम रसिक रस अयनी।
कहुँ झाँपत कहुँ उघरत नयनन, निद्रा महँ चित चयनी॥
कहुँ दृग खोलि पिया मुख प्यारी, निरखति बहु विधु मयनी।
कबहुँ प्रेयसी बदन विलोकत, रीझत पिय सुख दयनी॥
हियहिं लगे धरि पाणि पृष्ट दोउ, सोये सुखद सोहयनी।
दम्पति सुखी सुखी सब सेई, छाकी छबि पिक बैनी।
हर्षण अन्तर पट दै झाँकहिं, झाँकी झुकि मृग नयनी॥

(८६९)

मध्य दिवस में सोइ जगे दोउ।
आलस युत जमुहात पलँग पर, पिय प्यारी पुनि हृदय लगे॥
मधुर मधुर बतरात झँपत दृग, उठि बैठे परिकरन सगे।
चिबुक कपोल परस्पर परसत, अलक सम्हारत प्रीति पगे॥
इतै अली लै यन्त्र मधुर मधु, गाय जगावहिं रसहिं रँगे।
जागे जानि खोलि पट अन्तर, भीतर गवनी विरह भगे॥
देखि युगल छबि छहरत भवनहिं, मन बुधि ते सब गई ठगे।
हर्षण करि उत्थापन आरति, सेवा साज सँजोइ ढँगे॥

(८७०)

पलँग पीठ ते बाहर आये।
जनक नन्दिनी नरपति नन्दन, मन्द मन्द पग धरत सुभाये॥
बैठे सुभग सुखद शुचि आसन, अलिन पाणि मुख जलहिं धुवाये।
सुन्दर सेव अँगूर सुफल लै, सादर सुख कर सविधि पवाये॥
दै ताम्बूल गंध शुचि अरपी, भक्त चरित भरि भाव सुनाये।
दोउ सुख मानि सुने नव नेही, दोउ के वारि विलोचन छाये॥
बहुरि विरह वश बने विभोरे, धनि धनि जीवन जनहिं लगाये।
हर्षण ह्वै सचेत पुनि बैठे, भक्तन भावन स्वामि सुहाये॥

(८७१)

नहवाई सविधि लली लाल, सखियाँ सनेह भरी।
अंग अँगोछि वस्त्र दिय पहिरन, चरण पादुका बाल॥

सन्ध्योपासन करि पुनि दोऊ, सोहे रसिक रसाल।
नख शिख ते श्रृँगार दुहुँन को, करि भईं अली निहाल॥
फल रस पान कराइ पान दै, आरति भइ तेहिं काल।
केलि कुंज गवने प्रिय प्यारी, चित्त चोर चलि चाल॥
छत्र दिये अलि पीछे गवनति, कोउ लै चमरहिं ढाल।
हर्षण पहुँचि सुखी ह्वै अलियाँ, बैठारी जन पाल।

(८७२)

खेलत चौसर रसिया राम, संग सिया सुख धाम।
वसन विभूषण नख शिख सोहैं, मधुर मधुर मधुमय मन मोहै,
शोभा ललित ललाम॥
विधु कर निकर हँसनि सुख सारति, अधर शोणिमा हिय को हारति,
लाजत शशि शत काम॥
कर कमलनि लै हीरक पाँसा, डारत करि पव बारह आसा,
चितय चतुर पति वाम॥
इक एकन की गोटी मारै, पीटत पट्ट पट्ट सुख सारैं,
सखी लखहिं सिय राम॥
कोउ कहैं जय जानकि जीवन, बोलहिं कोउ जय सिया सुधीवन,
सुमिरि सुमिरि गुण ग्राम॥
हिलनि डुलनि बतरानि माधुरी, नयन सैन कल केलि चातुरी,
लागति अति अभिराम॥
हर्षण युगल किशोर की झाँकी, वरणि सकै नहिं शेषहु थाकी,
बसै हृदय अठ याम॥

(८७३)

क्रीड़त कन्दुक युगल किशोर।
केलि चौक मनहरण मणिन मय, चमचम चमकत चारहु ओर॥
सखिन संग श्री प्रीतम प्यारी, प्रमुदित क्रीड़ा के रस बोर।
उछरनि फेंकनि धावनि निरखनि, फहरनि पीत वसन चित चोर॥
निज जय जानि हृदय हुलसावनि, हँसनि बोलनि अमृत रस घोर।
श्रम कन सहित चन्द्र मुख मधुरा, अधर सम्हारनि करति विभोर॥
सखि समूह नभ वारिद विद्युत, सोहत सुन्दर श्यामल गौर।
हर्षण जय सिय जय रघुनन्दन, कहि सुर वर्षहिं सुमन अथोर॥

(८७४)

उड़ि उड़ि परत फुहारा, लखत लली लाल।
भवन वाटिका बीच बन्यो है, नयन लुभावन वारा॥
अलियन कहे जाहु जल लावहु, तहँ ते त्वरित सिधारा।
संप्रवेग ते भींज न पैहो, सुनत सखी पगुधारा॥
हरबर चली छटी महि माहीं, जल कण परे हजारा।
पूरि आस विहँसे रघुनन्दन, भींजे वदन निहारा॥
करि स्पर्श पोंछ पुनि प्यारे, कौतुक प्रिय सुकुमारा।
हर्षण हृदयानन्द प्रवर्धत, परिकरवृन्द मझारा॥

(८७५)

देखत मधुर मोरनी मोर।
दशरथ नन्दन जनक नन्दिनी, हर्षत हृदय किशोरि किशोर॥

नचत वाटिका मध्य छहर छवि, प्रेम पगे सो शकुन विभोर।
पंख नील मणि कनक से सोहत, बिखरे मोहत मनहिं अथोर।।
सखिन चितय प्यारी कह निरखहु, पक्षी नृत्य मधुर रस बोर।
लखत अलिन भइ चाह अलोली, रास कुंज गवनहिं चित चोर।।
पिय प्यारी दोउ नचैं सखिन सह, गीत वाद्य धुनि हृदय हिलोर।
रसमय राम रसहिं मय स्वामिनि, हर्षण रस वर्षैं चहुँ ओर।।

(८७६)

जिय की जोहे प्रमोद पिया प्यारी।
अलि रुचि समुझि चले रासस्थल, प्रेम पगे गल बहियाँ डारी।।
मन्द मुसुकि मन हरण सलोने, चित्त चोर चितवनियाँ चारी।
मन्द मन्द पग धरत धरणि महँ, सिंह हंस गज गतिया हारी।।
कर कमलनि दोउ कमल फिरावत, सोहहिं सँग सँग सखियाँ सारी।
छत्र दिये कोउ चमर चलावहिं, नृत्यहिं कोउ रस रँगिया नारी।।
मधुर मधुर दोउ रसिक रसिकिनी, अँग अँग अमृत अँखिया कारी।
हर्षण पहुँचि बैठि सिंहासन, वर्षैं रस झर झरिया झारी।।

(८७७)

आरति रास विहारी की, कीजै प्रीतम प्यारी की।
सखियाँ सब उत्साह भरी हैं, छत्र चमर लै छड़ी खरी हैं,
पान गंध दै सेव करी हैं, पुष्पहार हिय धारी की।।
जोरी युगल सिंहासन राजै, भहर भहर भल भावन भ्राजै,
कहर कहर करि सखिन समाजै, छहर छहर छबि वारी की।।

नख शिख भूषण वसन विमोहे, नटवर वेश बने सुठि सोहैं,
कोटि काम रति लाजि भजो हैं, शत शत शशि सुख कारी की॥
गीत वाद्य नव नृत्य माधुरी, भाव भंगिमा अलिन आतुरी,
रास रसन हित चपल चातुरी, सखियाँ सुठि रिझवारी की॥
चन्द्रकीर्ति रसिकेन्द्र सुजाना, सहित सिया सुन्दर सुख माना,
करन चहे सबहीं रस दाना, निरखि नेह नव नारी की॥
मुसकत मन्द मन्द मधुवारे, विधु कर निकर बिखेरि विहारे,
चितवनि चित्त चोरावत प्यारे, लली लाल सुख सारी की॥
उठे युगल गलबहियाँ डारे, रसिकन रसहिं रमावन वारे,
रस मय राम सिया सुकुमारे, हर्षण के हिय हारी की॥

(८७८)

नटनि अति नीकी प्रिया अरु पी की रसहिं रस बोर।
भाव भंगिमा भावत भारी, गति गरिमा हरुता हिय हारी,
सुखद सब हीकी, सबहिं सब बीकी, लखत बनि भोर॥
सखि मंडल मधि मुसकत दोऊ, रस मय राजि रहे रस मोऊ,
करहिं विभोरी, चितय सखि ओरी, चतुर चित चोर॥
कलित कला नैपुण्य साँवरो, भुवन श्रेष्ठ गन्धर्व ठाकुरो,
अधर वर वंशी, धरे अवतंसी, मधुर कर शोर॥
कहुँ कहुँ गावहिं प्रीतम प्यारी, पंचम स्वरहिं अलाप उचारी,
सुधा रस वर्षी, सबन्ह चित कर्षी, अनँद चहुँ ओर॥
मुरज मृदंग झाँझ झनकारी, वीणा वेणु श्रवण सुख कारी,

राग रस वारी, गाय सखि सारी, नचैं जिमि मोर॥
ताता थेई ताता थेई, थिरकि थिरकि के कहि ता थेई,
लखहिं भल जोरी, अली सिर मौरी, मधुहिं मधु घोर॥
रास कुंज रमणी रम रामा, पुंसा मोहन रूप ललामा,
हर्ष हिय हारी, सर्व सब वारी, रमैं तेहि ठौर॥

(८७९)

आजु अली अति अनन्द, वायु बहत मन्द मन्द,
रास रचे रामचन्द्र, जनक नन्दिनी॥
रास भूमि भली भाय, स्वर्ण मयी कान्ति काय,
बिछे बसन छबिहिं छाय, राति चन्दिनी॥
बाजत मुरली मृदंग, सारंगी सितार चंग,
मंजीर झाँझा सुढंग, वाद्य वन्दनी॥
नूपुर को मृदुल शोर, छाय रहेउ रसहिं बोर,
नचत नवल चित्त चोर, सिया संगिनी॥
सोहैं सखि मंडल बनाय, मध्य लली लाल लाय,
छमकि छमकि छुम छुमाय, छकै छन्दिनी॥
मूर्छनादि हाव भाव, ताल तान स्वर सुहाव,
श्रवण सुखद चितहिं चाव, दूर द्वन्दिनी॥
वेणु अधर धरे राम, राज रहीं सिया वाम,
बनि त्रिभंग सोह श्याम, छबि अनन्दिनी॥
चितवत इक एक ओर, करि कपोल एक ठौर,
हर्ष युगल बनि विभोर, भुजन फन्दनी॥

(८८०)

रस रचे सुख सारी लली अरु लाल।

नृत्यत दोउ कर पकड़ि परस्पर, सखिन बीच रस बारी,

रसे रस चाल॥

भाव भंगिमा चितवनि मुसकनि, नूपुर की छुमकारी,

गती गुनि ढाल॥

चन्द्रकला वर वीण बजावति, कोउ मृदंग दै तारी,

गीत गुण शाल॥

ताधिग धिग धिग ताधिग धिग धिग, ताधिन्ताधिन्घृक्टारी,

घृकट धिधि ताल॥

आ आ आ आ आ आलापै, पंचम स्वर सुखकारी,

मधुर मधु बाल॥

चन्द्र मुखी मुख चूमि चोरावत, चित्त चतुर हिय हारी,

रसिक रस आल॥

हर्ष मधुर मन मोहन मधु मय, चखी चखन नव नारी,

प्रीति प्रण पाल॥

(८८१)

छजत छबीलो छैला सिया सुख सरिया।

श्याम गौर सजि वसन विभूषण, नटवर वेश हृदय हँसि हरिया॥

रास कुंज रमणी बिच रसिया, नटत नवल दोउ करत कहरिया।

पायल पदनि परी मधु मधुरी, बाजति छुम छुम छबिहिं छहरिया॥

पिय पीताम्बर सिय जू कि सारी, चमकति दमकति फहर फहरिया।
अंश दिये भुज कहुँ कर पकरी, थिरकत श्री ललि लाल लहरिया।।
नृत्य गीत वर वाद्य कुशलता, कहे कौन रस बहै बहरिया।
धन्य धन्य हर्षण सब सखियाँ, पीवहिं पिय रस भहर भहरिया।।

(८८२)

रास केलि कहँ किये विराम, मुदित मन।
सखिन सहित निज महलहिं आये, पिय प्यारी सुख धाम।।
करि श्रम दूर अलिन ते पूजित, स्वस्थ हृदय जित काम।
जननि जनक दर्शन हित गवने, पाये प्यार प्रणाम।।
तिमि सिय सास श्वसुर पद प्रणमी, आशिष लही ललाम।
आयसु पाय पुनः गृह आये, सेवीं सखी तमाम।।
ब्यारू हेतु विनय कर जोरी, कीन्हीं अति अभिराम।
हर्ष चले भोजन हित दम्पति, रात गई यक याम।।

(८८३)

ब्यारू करत दोउ देखो भली री।
पिय मुख कौर प्रिया दै प्रमुदित, प्यारी मुख प्रभु प्रेम पली री।।
प्रीति रीति श्री लली लाल की, अकथ अपार अनूप अली री।
अचवन करि पुनि पान को पाये, सेवित सखियन हर्ष थली री।।

(८८४)

शयन कुंज नव नागरि नागर जात।
दै गलबाँह पिया अरु प्यारी, गति गयन्द झूमत रस रात।।

नख शिख सुठि सौन्दर्य अनूपम, वसन विभूषण बदन विभात।
कोटि कोटि कन्दर्प दर्प हर, रती अनन्ती लखत लजात॥
छत्र चमर सिर ढारहिं सिर पै, सखि समूह सेवत सरसात।
पहुँचि पलँग पै राजे रसिया, पिय प्यारी दोउ सुख न समात॥
भक्त चरित मिश्रित संगीतहिं, सखि मुख सुने दोउ पुलकात।
नृत्य गीत वर वाद्य मधुरिमा, हर्षण छाय रही सुख दात॥

(८८५)

नैहर नेह अधिक अनुरागी।
पिय प्यारी रुचि समुझि सयानी, चन्द्र कला सुख पागी॥
मिथिला चरित शशी सम सुखकर, सबहिं सुनावन लागी।
सिद्धि कुँअरि लक्ष्मीनिधि गाथा, कही प्रीति जिय जागी॥
तैसहिं जनक सुनैना भावहिं, वरणी गुनि बड़भागी।
पुरजन परिजन बालक वृद्धहिं, सुमिरि राम रस रागी॥
नयन वारि भरि भूली हर्षण, पितु पुर सोचि सोहागी।
तैसहिं राम सिया सुख साने, प्रेम यज्ञ के यागी॥

(८८६)

रिझवहिं राम रँगीली अलियाँ।
चारुशिला श्री चन्द्रकलादिक, विकसी मनहुँ कमल की कलियाँ॥
गाय बजाय नृत्य करि सेवहिं, निरखि निरखि पिय प्यारिहिं बलिया।
मूरति मधुर तजन नहिं चाहैं, यदपि शयन को समय सुभलिया॥

काह करै पग चलत न तनिकहु, छन वियोग सुधि करै विकलिया।
युगल किशोरहु परिकर सेवित, सुखी होंहिं प्रिय प्रेम के पलिया।।
सुनत सुनत संगीत मधुरिमा, आलस भरे नयन झँपि हलिया।
हर्षण सखी द्रुतहिं पौढ़ाई, पाँव पलोटहिं सुख की शलियाँ।।

(८८७)

शयन केलि रस रात, पलँग पर पौढ़ि पिया प्यारी।
रति शत कोटि सिया रघुनन्दन, कोटि काम छबि छात।।
युगल रसिक रसिकिनि रस स्वादत, रसमय रस उपजात।
काम कला कोविद कमनीये, कामिनि कान्त विभात।।
अच्युत वीर्य काम जित कोमल, काम में काम जगात।
हीन विकार सहज सुख सागर, सखियन सुखद सुहात।।
पगे परस्पर प्रीतम प्यारी, अधर अमिय रस पात।
हर्षण पिय करि कर उपवर्हण, सिय सिर राखि प्रभात।।

(८८८)

झाँकी शयन सुखकारी लखो री।
सोहत नवल नवेलो नवेली, रसिया प्रीतम प्यारी।।
अलसाने से मनहु कहत हैं, जाहु भवन सखि सारी।
सिय पिय सुख सुख सहज हमारो, चाहहिं चाह विचारी।।
आरति करि अवलोकि युगल छबि, मन मंदिर बैठारी।
एकान्तिक सुख सरसन देवहिं, अन्तर पट अब डारी।।

निज निज कुंज चलहिं अलबेली, गहरु न होय इहाँ री।
हर्षण होत प्रभातहिं अइहैं, लखिहैं सर्वस वारी॥

(८८९)

आरती सिय पी की पलँग पर की।
रस मय दोउ रसहिं में रासे, केलि करैं निज हीकी॥
पगे परस्पर प्रेम में प्यारे, शयन करैं सुख सी की।
मंगल देखहिं मंगल पर्शहिं, मंगल मय निशि नीकी॥
सुख मय स्वप्न सुषुप्ति जागरण, प्राण प्राण जिय जी की।
सुख मय आलस अरु अँगड़ाई, सुख मय श्वास सुधी की॥
सुख मय प्राप्त प्रभात विलोकहिं, जागि दोउ लग ली की।
हर्षण परिकर वृन्द प्रमोदहिं, दर्श पाई सब बीकी॥

(८९०)

निज निज कुंज चलीं अलबेली।
करि प्रणाम परदा करि द्वारे, उर धरि नवल नवेली॥
मुरुकि मुरुकि पुनि पुनि लखि पट ते, प्रीतम प्रिया सहेली।
हर्षण हर्षि हृदय अनुरागी, सबहीं प्रेम पुतेली॥

(८९१)

सिखवति चन्द्रकला सखि स्वामिनि।
पहरे वाली सजग सब रहियो, नीति प्रीति परतीति की धामिनि॥
सुखते शयन करहिं पिय प्यारी, जाय निमिष सम अमृत यामिनि।
झनक भनक नहिं श्रवण परे जेहिं, हर्ष उपाय किहेउ अभिरामिनि॥

(८९२)

सोय गये राम नवल नागरिया।
नूपुर छोरि चरण धरि धीर, चलहु सबै निज निज डागरिया॥
तनिक शोर सुख शयन सदन में, होय नहीं नतु दोउ जागरिया।
हर्षण सखी स्व कुंजहिं गवनी, सोई सिय पिय लव लागरिया॥

(८९३)

यहि विधि विहरत आठहु याम।
परिकर वृन्द सुखी रह जेहिंते, सोइ कर पूरण काम॥
मातु पिता ढिंग कबहुँ सखन सँग, कहुँ दासन विश्राम।
कबहुँ सिया सह सखिन संग में, करत केलि सुख धाम॥
कहुँ चौगान केलि आखेटी, करत अनुज सह राम।
वन विहार सरयू जल केली, कबहुँ कथा कह श्याम॥
शरद रास कहुँ श्रावण झूला, कहुँ वसन्त अभिराम।
हर्षण हर्षि सबहिं हर्षावत, श्रवण सुखद गुण ग्राम॥

(८९४)

करन अखेट राम गये सुन्दर सुखकारी।
अनुज सहित अश्व चढ़े, शारँग धनुधारी॥
सोह सखा साथ साथ, सेवक सब सुभग गाथ।
अस्त्र शस्त्र संग लिये, वीर वेष चारी॥

श्वानहू शिकारि संग, प्रीति पले भरि उमंग।
वाद्य बजत जोर जोर, वीर रस प्रसारी॥
वन ते वन करि प्रवेश, किये केलि राघवेश,
पूर्ण काम लौटि चले, दिवस कम निहारी॥
इतै अवध वाट देख, अइहैं अब प्रभु विशेष,
हर्षण नर नारि सबै, बाल वृद्ध झारी॥

(८९५)

सखी री कब अइहैं रघुराई।
कलित केलि आखेट की करिकै, सहित सखन चारो भाई॥
विकसित श्याम सरोज वदन हित, नयन भ्रमर ललचाई।
मधुर मधुर मकरन्द पान करि, कब रहिहैं मेड़राई॥
अश्व चढ़े धनु बाण को धारे, कटि तूणीर सुहाई।
मोहत मनहिं अवध के बीथिन, चितवनि चित्त चोराई॥
मुसकनि मन्द अमिय वर्षावत, देखिहैं लोग लोगाई।
हर्षण साँझ भई नहिं आये, कहरत हिय अकुलाई॥

(८९६)

अली री चित नहिं चैन धरे।
सुन्दर श्याम राम धनु धारिहिं, निरखन नयन अरे॥
शोभा सदन मधुर मन मोहन, काको मन न हरे।
देखि रूप वन मृगी मृगा सब, देखत दृगन टरे॥

प्रीति पगे भरि लोचन नारिहिं, पूजा मनहु करें।
भूलि देह इत उत नहिं गवनहिं, नहिं धनु शरहिं डरे॥
भूरुह लतहु देखि झर पुष्पन, श्रवत रसहिं सगरे।
नवि नवि डार प्रणाम करहिं जनु, कुसमय फलहिं फरे॥

(८९७)

आली कब ऐहैं चित चोर।
गहरु भई दिन अस्त समय भो, आये नहीं किशोर॥
धनि धनि वन मृग सुआ सारिका, चातक कोकिल मोर।
जे भरि नयन लखहिं रघुनन्दन, प्रीति पगे रस बोर॥
धन्य मही द्रुम लता वितानहु, जेहिं लख हरि दृग कोर।
धन्य सरित सर जेहि पय पीवत, राम रसिक सिर मौर॥
अश्व पदन चिन्हित मग धनि धनि, जेहि सम जगत न और।
हर्षण हयन भाग को वरणै, लह प्रभु प्यार अथोर॥

(८९८)

तुरँग चढ़े सखि चारहु वारे।
ललित लगाम गहे कर कंजन, बाँके वीर वेष सुख सारे॥
क़ब अइहैं सह सखिन अवध पथ, मुसुकत मन्द मन्द मन हारे।
नर नारी नयनोत्सव निरखी, बजिहैं वाद्य विपुल पुर द्वारे॥
कनक कलश लै आरति करिहैं, गृह गृह खड़ी तिया लव लारे।
पुष्प वरषि जय जयति उचरि हैं, निरखि निरखि निज नयनन तारे॥

रस रस चलत राम रघुनन्दन, लखिहैं सब कहँ प्रेम पसारे।
हर्षण कृपा कोर को हेरी, होइहैं सबहिं सुखी प्रिय पारे॥

(८९९)

श्री रसिक राय रघुनन्दन में, अवध तियन को चित्त लगा।
बैठत उठत चलत अरु सोवत, सिया रमण के रंग रँगा॥
सास श्वसुर पति वत्स के सेवत, खात पियत गृह कृत्य लगा।
सहज स्वभाव अखण्ड एक रस, श्याम सुँदर के प्रीति पगा॥
मुख ते नाम चित्त ते चिन्तन, मन ते मनन सुबुद्धि जगा।
हिय ते ध्यान शरीर ते सेवा, करहिं जानि सिय स्वामि सगा॥
नाम रूप अरु लीला धामहिं, करी नेह जग बीज भगा।
हर्षण सुर मुनि नाग सराहहिं, कीन्हीं सुकृत समूह यगा॥

(९००)

आवत अश्व चढ़े दशरथ के कुमार हैं।
संग सखा अनुज लिये सेवक हज़ार हैं॥
वीरविरदवदतवन्दि, जयजयकह, सबअनन्दि,
वाद्य बजत मेघ शोर, धुनि बेशुमार हैं॥
केते लै धनुष बाण, केते लै असि सुहान,
तुपक कंध केते, वीर वेश बरियार हैं॥
कीन्हें गज की सवारि, केते हय में पधारि,
केते खच्चर औ ऊँट, करते चिघार हैं॥

सुरन सेन रिपुहिं जीति, लौटी जनु लहि सुकीर्ति,
संग मदन चार रूप, सोहत अपार हैं।।
वायु वेग संसनात, धूरि गगन भरि उड़ात,
चहल पहल छाय रहो, शोभन सुखार हैं।।
जानि पुरी अति अनन्द, आवत श्री राम चन्द्र,
वाद्य बजन लगे होत, मंगल के चार हैं।।
आरति लै लै दुआर, खड़ी मगहिं नवल नार,
कनक कलश शिरहिं धरे, हर्षण सम्हार हैं।।

(९०१)

अवध मग माहीं चलैं रघुराज।
चारहु भाई चढ़े तुरंगन, मारि मदन मद काहीं।।
सोहत चन्द्र कीर्ति बुधिवारे, कोटिक चन्द्र लजाहीं।
नर नारिन की भीर कहै को, मणि गण द्रव्य लुटाहीं।।
करहिं आरती पुष्पहिं वर्षी, जय जय शब्द सुनाहीं।
देखि देखि मन मोहन मूरति, सुख के सिन्धु समाहीं।।
सुरहु सुमन झरि दुंदुभि देवहिं, गगन विमान सोहाहीं।।
हर्षण हर्षि हेरि हिय हुलसत, कहि न जात मोहिं पाहीं।।

(९०२)

मातु मुदित मन आरती, कीन्हीं नेह निहारती।
करत प्रणाम पुत्र हिय लाई, शीश सूँघि सुख सिन्धु समाई,
पुनि नहवाय सुभोग पवाई, लखत लाल पुलकावती।।

पितहिं प्रणाम किये भरि मोदे, भूप लिये प्रिय पुत्रहिं गोदे,
चारहु सुवन अखेट विनोदे, प्रीति परम छबि छावती॥
निज निज सदन गये चहुँ भाई, देखत रामहिं सिय उठि धाई,
सखिन सहित सुख सरित नहाई, प्रेम पगी किय आरती॥
मिलनि प्रीति कहि जाय न कबहूँ, शेष शारदा कहैं जो तबहूँ,
हर्ष किये विश्राम युगल हूँ, सब सखि सेवा सारती॥

(९०३)

खेलत चौगान आज दशरथ के लाला।
हय चढ़ि कन्दुक कि केलि, माची उर उमँग मेलि,
सोह रही सब समाज, राघव प्रति पाला॥
राम लखन एक ओर, भरत रिपुहन दुसरि ओर,
सखा जनहिं पुनि विभाज, चतुर चलैं चाला॥
हय कन्दुक उछाल, हयहीं ते तेहिं सम्हाल,
बाजिहिं ते बाजी साज, सुन्दर सुख काला॥
कोउ कहैं जयति राम, कोउ भरत जयहिं काम,
लखन शत्रुहनहु भ्राज, करत पक्ष ख्याला॥
गेंद गहन धीर धाव, ताकि अश्व को कुदाव,
कोउ चूक कोउ गाज, गाव गुण रसाला॥
क्रीट मुकुट झलझलात, कुण्डल कर्ण में हिलात,
केश विथुर मुखहिं राज, टूटत मणि माला॥

हर्षण लखि गगन देव, जय जय कहि करत सेव,
वर्षि सुमन बजै बाज, झूलत जग जाला।।

(९०४)

खेलत सरयू तीरे, सखा सब संग लिये।
राम के साथ लखन है प्रमुदित, भरत शत्रुहन वीरे।।
गनि गनि जोरी बाँट लिये हैं, केलि कला सुख सीरे।
राम जीत सौमित्री चाहत, रिपुहन भरत जयी रे।।
लागे हारन भरत केलि महँ, लक्ष्मण जय उचरी रे।
भरत हारि रामहिं नहि भावति, निज की हार सुखी रे।।
करि उपाय भरतहिं जितवाये, हारे आप सुधीरे।
अस स्वभाव कहुँ स्वप्नेहु नाहीं, हर्षण हृदय हरी रे।।

(९०५)

जय जय भरत भये विजयी हैं।
कहत राम सुख सने उच्च स्वर, पुलाकावली अई है।।
हरि-मन-मोर नचन तहँ लागेव, धन जय भरत भई है।
दिय परितोषिक द्रव्य सबन्ह कहँ, भूषण वसन मई है।।
तैसहिं दान द्विजहु बहु पाये, आशिष वचन दई है।
वाद्य बजत श्रवणहिं सुख वर्धत, प्रभु पद भरत लई है।।
सिर नत सकुचि कहे जय राउरि, आनँद मय अभयी है।
हर्षण कृपा कोर ते जन कहँ, मान देत हृदयी हैं।।

(९०६)

भरतहिं राम हृदय लपटाये।
प्यारि पोंछि चुचुकारि सवन सह, अश्व चढ़े पुर अवधहिं आये॥
आनँद मय दिन जात नित्य नित, सुख के सिन्धु उमगि उमड़ाये।
हर्षण भक्तन के मन भावन, करत चरित सुर मुनि सुख दाये॥

(९०७)

फुल बँगला बन्यो मन भावना।
विविध भाँति के कुसुम सुहावन, कदली पट जड़ि जावना॥
कदलिहि के करि खंभ पुष्प मय, पुष्पन छानी छावना।
पुष्प मई पुहुमी भलि भ्राजति, पुष्पनि चौक पुरावना॥
पुष्पहिं के गुलदस्त गलीचा, पुष्पनि गमला पावना।
पुष्पन के बहु हार जहाँ तहँ, पुष्पनि साज सुहावना॥
पुष्पहिं के बहु बने बिछावन, पुष्पनि परदा नावना।
पुष्प मयहिं सिंहासन शोभित, हर्षण गुनि गुण गावना॥

(९०८)

राजत प्रीतम प्यारी अहो फुल बँगले में।
शोभा सदन मनहु मधु मूरति, सुख सुषमा श्रृँगारी॥
पुष्पन को भल मुकुट चन्द्रिका, पुष्पन कुण्डल कारी।
पुष्पन बाजूबन्द बिजायठ, पुष्पन कंकण धारी॥
पुष्पन हृदय हार लसि लहरत, पुष्पनि करधनि ढारी।
पुष्पन कड़ा पुष्प को नूपुर, पुष्पहिं पुष्प सम्हारी॥

पुष्पनि छत्र पुहुप सिंहासन, पुष्प चमर छबि भारी।
हर्षण पुष्प छड़ी कर शोभित, पुष्प प्रोक्षणी न्यारी॥

(९०९)

पुष्प मई सब सखियाँ सलोनी।
नख शिख ते सजि पुष्प विभूषण, सोहैं सब सुन्दरि सुख भौनी॥
पुष्पन के सब वाद्य सिंगारी, पुष्पनि साज सजी रस बोनी।
पुष्पन थार पुष्प की आरति, करन लगीं हर्षण हित होनी॥

(९१०)

सखि आरति कीजै पुष्प झरी, पुष्पन थार प्रमोद भरी।
दै गलबाँह प्रिया अरु प्रीतम, विहँसत पुष्प बिखेर अरी॥
पुष्प भवन भल भावत सरसत, नख शिख सुमन श्रृँगार करी।
मनहु सुमन की मोहनि मूरति, शोभा सुख की खानि खरी॥
चेतन तत्व डारि बल अपने, काम विरचि निज पाणि धरी।
सुर गण मुदित निशान बजावत, पुष्पन वृष्टि अनंद ढरी॥
गंधर्वी किन्नरि नभ नृत्यहिं, गावहिं गुण जय जयति हरी।
हर्षण अली भूमि तिमि सुख ते, नृत्य गीत वर वाद्य करी॥

(९११)

फुल बँगले की झाँकी मजा की बनी।
दशरथ नन्दन जनक नन्दिनी, मिथिला अवध के दोऊ धनी॥
सुमन श्रृँगार किये सुठि सोहत, सुमन सिंहासन सुख में सनी।

सुमन छत्र अरु चमर सुमन को, सुमन छड़ी छबि खानि गनी।।
सुमन विभूषण सजे सखी सब, सुमन मई सब साज घनी।
सुमन विभूषित वाद्य बजत बहु, नृत्य गान कल कुंज ठनी।।
सुनि सुख सनत पिया अरु प्यारी, मोहत मुसुकनि मधुर मनी।
हर्षण चितय चित्त को चोरत, राम रसिक सिय सुभग जनी।।

(९१२)

लला लोचन लोभाय लयो रे, फुल बँगला बिहारी।
सिया सहित सोहैं सुख सागर, सुमन श्रृँगार अनूप कयो रे।।
सुमन सिहाँसन बैठि युगल वर, मुसकनि मनहिं मोहाय दयो रे।
पुष्पहिं पुष्प साज सब सोहैं, पुष्प विभूषण अलिन भयो रे।।
फूलहिं फूल विविध विधि लैके, भवन बनायो गुणिन चयो रे।
बेला चमेली चम्पा जूही, कुन्द कमल कचनार नयो रे।।
मोगरा मालति मह मह मोहै, गुलबकवली गुलाब मयो रे।
हर्षण सुरहु सुमन शुचि वर्षत, नृत्य गान वर वाद्य जयो रे।।

(९१३)

सोहत सुमन श्रृँगार करे।
नरपति नन्दन नृपति नन्दिनी, पुष्प भवन के बींच अरे।।
लखत परस्पर मृदु मुसुकावत, भूषित भुज भल अंश धरे।
कबहुँक भूषण वसन सम्हारत, अरसि परसि सुख सिंधु परे।।
लगि लगि कंठ चूमि मुख दोऊ, छन छन रस की झरनि झरे।
बोलत वचन बसहिं कर अलियन, मधुर मधुर मुख हँसनि भरे।।

नृत्य गीत वर वाद्य सखी करि, सेवहिं परमा प्रीति करे।
हर्षण सो सुख कहत बनै नहिं, सो समुझै जेहिं राम वरे॥

(९१४)

नीकी लगै छबि तोरी रे प्यारी।
सुमन श्रृँगार किये सुख वर्धनि, प्रकृति छटा सब फीकी लगै॥
निरखि निरखि भल भव्य वरानन, मन चित बुद्धिहु वीकी लगै।
दरश परश करि अङ्ग अनूपम, हर्षण तू जिय जीकी लगै॥

(९१५)

प्यारे तेरो सुमन श्रृँगार सुहावै।
नख शिख सुमन विभूषण साजे, कोटिन काम लजावैं॥
मधुर मधुर मन मोहन मुख लखि, मम मन अनत न जावै।
पुष्पित बदन पराग पियन हित, हर्ष दृगहु ललचावैं॥

(९१६)

मुसकहिं पिय अरु प्यारी दिये गलबहियाँ।
सुमन श्रृँगार लिये कर शीशा, निरखहिं नवल बिहारी॥
परसि बदन सुख लहिबे हेतहिं, युक्ती युगल विचारी।
हृदय हार शिर सुमन विभूषण, किये सुधार सुखारी॥
अलकहिं अलक कपोल कपोले, सटे सुरति सुख कारी।
मधुर मुसुकि बतरात परस्पर, अलियन ओर निहारी॥
गम गमाय मुख वायु सुगंधित, को हम कहाँ बिसारी।
हर्षण हेरि सखी सुख सरसहिं, देवहिं सर्वस वारी॥

(९१७)

आली लखो फुल बँगले की झाँकी।
सुमन सदन बिच सुमन सेज में, सोये श्यामा श्याम एकाकी॥
नख शिख सुमन श्रृंगार किये दोउ, सोहै सुमन बिछावन बाँकी।
सुमनहिं को उपवर्हण राजत, सुन्दरि सुमन पिछौरी जाकी॥
सुमनहिं को अन्तर पट दीन्हें, विलसत राम सिया रस छाकी।
सुख की राति सुखहिं में साने, सखी करहिं अनुभव मन साकी॥
को कवि कहै अतर्क निरतिशय, जहँ न जाय मन बुधि वर थाकी।
हर्षण हेरु हृदय यहि रस कहँ, पियै मुदित भव फेर न ताकी॥

(९१८)

ग्रीषम की ऋतु आई अवध सैंया।
कुसुमित तरु फल भार नमें बहु, कोकिल कुहुक मचाई॥
सरयू जल निर्मल शुचि शीतल, संत हृदय जस भाई।
जानकि घाट घाट सर्वोत्तम, एकान्तिक सुख दाई॥
जल की केलि करहिं पिय प्यारी, सखिन सहित तहँ जाई।
चन्द्रकला कह अलिन हृदय की, दीन्हीं चाह जनाई॥
सुनि सुख मानि विहँसि रघुनन्दन, सिय मुख चितय सुहाई।
कहेउ करहिं क्रीड़न जल सरितहिं, हर्षण चित्त चोराई॥

(९१९)

सरयू तट दोउ भरे उमंग।
करन केलि सखियन सह गवने, जनु तिय साथ अनंग॥

देखि सुखी वाशिष्ठी उछरी, नव नव तरल तंरग।
अली वेष धरि बहु सरि आई, सेवन सियहि सुढंग।।
गोदा गोमति नर्मद सिन्धू, सरसुति जमुना गंग।
तैसहिं सरयू सखी रूप बनि, परमा प्रीति अभंग।।
करि प्रणाम सिय रामहिं सुख सनि, उबटी अनुपम अंग।
हर्षण पाइ परश मन मोदी, रँगी राम के रँग।।

(९२०)

सरयू पुलिन परम प्रिय पाई।
भरि उत्साह अली हिय हर्षी, विस्तृत वस्त्रहिं लाई।।
दक्षिण तट दीन्हीं पट अन्तर, जाल रंध्र छवि छाई।
जानकि जी को घाट इकान्तिक, तहँ कोउ पुरुष न जाई।।
जबहिं सवारी सिय की आवति, ध्वज पताक फहराई।
सजग रहत पुर के नर नारी, अलि प्रहरी बनि आई।।
सखियन प्रार्थित लाल लली तव, जल विहार चित लाई।
प्रविशे जल जिमि करि लै करिणिन, हर्ष न हृदय समाई।।

(९२१)

सरयू करत किलोल पिया अरू प्यारी लखो।
सखिन साथ राजत रघुनन्दन, सहित सिया रस घोल।।
कबहुँ कमल कर लै जल छिरकहिं, बोलि मधुर मृदु बोल।
कबहुँ परस्पर पानि ते उलचैं, मारहिं नयन कपोल।।

कहुँ तैरहिं कहुँ छुयें छके रस, उपजति प्रीति अतोल।
कबहुँ बूड़ि पिय अलि पद पकड़ी, कर्षत जलहिं विलोल॥
दाव लगे पुनि पानिहिं भीतर, खींच लेत पट खोल।
हर्षण सखिन सुखहिं सुख वर्धत, नित निष्काम अडोल॥

(९२२)

विहरत सरयू सिय को सजनमा।
सिय के साथ सखी शुचि लीन्हें, जल की केलि करै सुख सनमा॥
एक एक ऊपर जल की छिरकनि, लसत सुलोचन लाल लोभनमा।
उलचि तोय इक एक पछेलनि, मुसकनि चितवनि कहर करनमा॥
कहुँ पिय प्यारिहिं कहुँ अलि पिय कहँ, तैरहिं पृष्ट पराय रसनमा।
यहि प्रकार कर केलि मगन मन, जिमि करि करिणिन लिये सोहनमा॥
अलियाँ वसन विभूषण भूली, अस्त व्यस्त तन भींगि मोहनमा।
हर्षण रसिक राय रघुनन्दन, प्रेमिन प्रेम पियै छन छनमा॥

(९२३)

केलि किये उपराम प्रेम पगि।
पोंछि वदन पुनि वस्त्रहिं धारे, सखिन सहित सिय राम॥
सरयू पुलिन विहार करैं दोउ, अलियन सँग जित काम।
जे जल जीव रहे शुचि सरितहिं, कच्छ मच्छ बहु नाम॥
ते सब वारि बीच उतराये, कछुक किनारे भ्राम।
निरखि निरखि नृप नन्दन काहीं, लहत हियहिं विश्राम॥

कौतुक बस दै तालि भगावहिं, अलि गण ललित ललाम।
दर्शन त्यागि भगैं नहिं भय ते, दिय भोजन सुख धाम॥

(९२४)

गवने राजकुमार सिया सँग लीन्हें।
कनक भवन महँ जाय प्रमोदे, अशन शयन सुख सार॥
बैठि सखिन मधि केलि कथा कह, जेहि विधि भयो बिहार।
चन्द्रकला कह प्यारी प्रीतम, दोउ दिवि अलिन अधार॥
सखिन विनय सुनि निज सुख वितरन, कीन्हे कष्ट अपार॥
जल समूह सीकर लगि नयनन, भई अधिक रतनार।
श्रमहू अधिक भयो जल क्रीड़न, पै प्रभु परम उदार।
हर्षण कृपा कोर ते हेरेव, छमि अपराध हमार॥

(९२५)

कहुँ कहुँ सन्ध्या समय में आय।
नाव बैठि प्रीतम अरु प्यारी, सखि सँग सरसि सुहाय॥
विहरत सरयू सलिल सुभग दोउ, अलियन मोद बढ़ाय।
रन्ध्र पूर्ण वर वसन ते घेरी, रत्न मई प्लव भाय॥
नृत्य गान वर वाद्य मधुरिमा, प्रगटहिं सखि गुण गाय।
धवल धार जल परसि पाणि ते, हर्षत हृदय अघाय॥
कहुँ दोउ तटनि विलोकत दृश्यहिं, वन उपवन सुख पाय।
हर्षण सरिता कमल तोड़ि के, सूँघत छवि छहराय॥

(९२६)

देखो देखो री सखी सरजू सरित की शोभा अपार।

रत्न जटित सुन्दरि नव नैया, सहित सखिन सीता रघुरइया॥

जहँ बैठे मुदित दोउ करते विहार।

सुख मय जहँ सिंहासन सोहै, छत्र चमर लै अलि मुख जोहैं॥

हिय हारैं हरषि नहिं करती सम्हार।

नाचहिं गावहिं सखी सहेली, वाद्य बजावहिं मधुर नवेली॥

सुख सारै सरसि बह अमृत की धार।

सरयू लहर उठै छवि छाई, मानहु आनँद हिय न अमाई॥

पद चाहैं परसि सिय रघुवर निहार।

सीता राम करन ते परशी, शीतल लहर लहैं सुख सरसी॥

जनु प्यारैं सरित कहँ झुकि झुकि उदार।

सो सुख शोभा देवहु देखी, वर्षि सुमन मन मोद विशेषी॥

सब बोलैं जयति जय दुंदभि को मार।

यहि विधि दोउ बिहरे सरि माहीं, आये बहुरि सदन सुख लाही॥

निशि व्यारु किये पुनि सोये सुखार।

(९२७)

पावस के दिन आये अली री।

पिय परदेश गये रथ चढ़ि कै, तिरहुत भूप बोलाये॥

आवन कहे द्रुतहिं मन भावन, अजहुँ न दर्शन पाये।

उमड़ि घुमड़ि घन बिजुरी चमकै, वर्ष वारि नियराये॥

गरजि तरजि श्रवणहिं जनु बर्षई, जियरा मोर डेराये।
पवन वेग झक झोर कहौं, तरुवर तोरि बिछाये।।
मंगल मय को मंगल मारग, गुरु प्रसाद भल भाये।
हर्षण सुभग अंग लखि फरकनि, धीर धरौं लव लाये।।

(९२८)

नहिं आये अली मन मोहना।
सास श्वसुर अरु सारी सरहज, श्याल प्रीति जिय जोहना।।
करतहिं बात सुनी सब सखियाँ, आय गये सुठि सोहना।
प्रेम पगी मन मुदित प्रभुहिं को, मिली ललकि दृग दोहना।।
अवध पुरी आनँद अति छायो, निरखि नवल छवि छोहना।
कारी घटा गगन में छाई, भूमि श्याम भल भौंहना।।
नभ ते वारि वृष्टि सुखदायक, महि रस धारा ओहना।
हर्षण हर्ष कहै को पारी, प्रेम पुष्प स्त्रग पोहना।।

(९२९)

आज अहै गुरु पूर्णिमा सखि पूजै परम गुरु देव को।
सीता सहित राम रघुनन्दन, करै सकल विधि सेव को।।
षोड़स भाँति पूजि करि आरति, मंगल पढ़ गुनि भेव को।
ममता अहं बिना बहु भेंटी, अरपे सर्वस सेव्य को।।
गुरु अर्चा माहात्म सुनायो, धन्य धन्य प्रभु धेव को।
उत्सव बहुत भाँति करवाये, बसि गुरु आश्रम देव को।।

गुरु बिनु विधि हरि हर का करि हैं, बड़ भव सागर खेव को।
अस बिचार हर्षण गुरु सेवा, करहु मुदित चख मेव को॥

(९३०)

पूजैं गुरु गुरुआनी युगल वर।
गुरु पूर्णम परि पूर्ण करावनि, पूर्ण तत्व दै दानी॥
पूर्ण पूर्ण सिय राम सुखहिं सनि, षोड़स सेव अमानी।
भेंट भली अरपे बहु भाँतिन, गुरु हीं की जिय जानी॥
परम प्रसन्न वशिष्ठहु तिय सह, प्यारे प्रेम प्रमानी।
परम तत्व परमारथ वरणे, सुने शिष्य सुख खानी॥
सद गुरु अरु सद शिष्य समागम, अनुभव गम्य न बानी।
हर्षण सुरहु सुमन झरि देखत, शिष्य शीश गुरु पाणी॥

(९३१)

पावस ऋतु प्रिय पनिया परै बड़ी बूँद।
उमड़ि घुमड़ि घन घहरत कारे, गरज तरज वरषनिया॥
चारहु ओर पुनः पुन ओनई, चपला चख चमकनिया।
नृत्यहिं मोर मोरनी वन वन, देखि दृगन जल दनिया॥
पपिहा पी पी प्रेम पुकारत, कोयल कुहू कहनिया।
लाल बहूटी महि महँ भ्राजत, दादुर शोर सुहनिया॥
हरित भूमि सरि पूर्ण बहति जल, लसति लहर लहरनिया।
हर्षण कृषक कृषी के काजहिं, लगे हरषि हित गनिया॥

(९३२)

गगन रहे मेड़राय बदरवा।
कारे कारे ओनइ ओनइ के, उमड़ि घुमड़ि घहराय।।
गरजि तरजि बहु विजुरी लपकै, आँख कान भय खाय।
वर्षत वारि मूसला धारी, सरित उमगि उमड़ाय।।
पावस राज महत महि छायो, प्रवल प्रताप दिखाय।
मेढक मोर शोर चहुँ ओरी, बजत वधाव जनाय।।
हरित भूमि पत्नी जनु तेहिं की, भई सुखी रस पाय।
विविध अन्न संतति कहँ प्रगटी, हर्ष न हृदय समाय।।

(९३३)

झूलन की ऋतु आई अली मोरी।
श्रावण सुखद सुहावन भावन, हरित भूमिका भाई।।
झूलन कुंज हिंडोर सजावहु, सुख प्रद सहज सुहाई।
सुनि वर विनय चलैं ललि लालन, झूलहिं उर उमगाई।।
नयन कृतार्थ करैं सब सजनी, झुकि झुकि झमकि झुलाई।
चन्द्रकला के वचन सुधा सम, सुनत सखी सुख पाई।।
पहुँचि हिंडोर कुंज मन मोदित, झूला दीन्ह सजाई।
हर्षण हर्षि सियहिं सब सखियाँ, हिय की बात बताई।।

(९३४)

अरुझि करैं मम नयन स्वामिनी।
पिय प्यारी की झूलन झाँकी, झाँका चहैं सुख दैन।।

श्रावण सुख सरसावन लखि के, चित्त धरत नहिं चैन।
पपिहा पिउ पिउ बोलि सिखावत, सेउ पियहिं दिन रैन॥
कोकिल कुहू कुहू कहि सिखवति, सुनहु मधुर मृदु बैन।
मेघ मलार अलापहु प्यारी, प्यारे सह सुख ऐन॥
समय गये पुनि समय न ऐहैं, सोचहु बुधि की पैन।
अलियन अरज हर्ष हिय धरि के, प्रेरहु पिय जित मैन॥

(९३५)

प्यारे झुलन पधारो अलि प्रेम में पगी।
लखि लखि श्रावण बहार, नन्हीं बूँदन फुहार॥
विनवहिं सखि सर्वस वार, रौरे रँग में रँगी।
झूलन झाँकी तिहार, चाहै नयनन निहार॥
नृत्य गान सुख सम्हार, सेवै भव ते जगी।
मोरे मन में विचार, प्रीतम करि के सुप्यार॥
हर्ष हिंडोर में पधार, चोरै चित को ठगी।

(९३६)

चलो चलो हो किशोरी सुख लावन को।
पियो पियो हो पियारी रस श्रावण को॥
सखी सहेली सहचरी, अली मंजरी रानि,
षट प्रकार निमिकुल सुता, हमहिं तुमहिं सुख दानि,
देहिं रसहिं वर्षाई भरि भावन को॥

श्रावण मन भावन लग्यो, उर महँ उठत उमंग,
रिमझिम वर्षै वारि घन, झूलहिं तुम्हरे संग,
सखि गण सबहिं झुलाई छवि छावन को॥
नचत मोर वारिद निरखि, कुहुकति कोयल जोर,
नृत्य गान वर वाद्य सुख, लहहिं हमहुँ रस बोर,
अलियन के मन भाई, गुण गावन को॥
हरित भूमि तृण संकुलित, सरयू लेति हिलोर,
सखियाँ सिगरी सुखहिं सनि, हर्षहिं भाव विभोर,
नव नव अनँद अमाई, प्रिय पावन को॥

(९३७)

चले दोउ झूलन को पिय प्यारि।
सुख सह गवन सखिन सँग सोहत, द्वै शशि नखत मझारि॥
दै गल बाँह मंद मुसकावत, चोरत चित्त निहारि।
शोणित अधर पान पुनि पाये, प्रेमिन प्रेम पसारि॥
कल कपोल कुण्डल कर केली, यथा मीन सर वारि।
अलकैं ललित अतर की बोरी, कारी अति गभुआरि॥
क्रीट चन्द्रिका सटि मन मोहत, मुख माधुरि हिय हारि।
गति गयंद कर कमल फिरावत, हर्षण जन सुख कारि॥

(९३८)

देखो सखि आवत दिये गलबाहीं।
श्रावण सुख साने पिय प्यारी, झूलन हेतु उछाही॥

वसन विभूषण अँग अँग साजे, शोभा सिन्धु अथाही।
कोटि काम रति वारहिं जापै, शत शशि आनन आहीं॥
सखि समूह विच राजहिं रसिया, रसिकिनि संग सोहाहीं।
कोउ सखि चमर छत्र कोउ लीन्हें, अँतर पान कोउ पाहीं॥
कोउ नृत्यत कोउ गावत आवहिं, कोउ वर वाद्य बजाहीं।
हर्षण कुंज हिंडोर अनूपम, चल पिय पद जेहिं माहीं॥

(९३९)

झूलन बैठे झमकि दोउ आय।
चितवनि मुसकनि मन को मोहाय॥
पिय प्यारी भुज अंश धरे पुनि, मधुरे मधुरे मुख नियराय।
कोटि सूर्य सम सहज प्रकाशित, शत शशि शीतल आनन लाय॥
भहर भहर भल वसन विभूषण, छहर छहर छवि छाजत काय।
जगर जगर जिय ज्योति जगावत, प्रेम पंथ प्रेमिन दरशाय॥
अलिगन निरखि सुखहिं में सनि के, पूजहिं प्रणय पुष्प वर्षाय।
युग युग जियै युगल वर जोरी, कहहिं जयति जय एक स्वर गाय॥
हर्षण पान गंध स्त्रग अरपी, नृत्यारति किय भावन भाय।

(९४०)

आरति युगल किशोर की, सखियन के चित चोर की।
झूलन कुंज पिया अरु प्यारी, छवि श्रृंगार अनूप अपारी,
झूलत हरित हिंडोर की॥

गरजि तरजि घन दामिनि सोहै, रिमझिम रिमझिम वर्ष विमोहे,
नाचनि मोरी मोर की।।
पपिहा पिउ पिउ शोर मचावै, कोयल कुहू कुहू कहि गावै,
बोलनि दादुर जोर की।।
नदी नार सबहीं उतराई, तरल तरंग दृगन सुखदाई,
सरयू सरित हिलोर की।।
चहुँ दिशि छवि छाई हरियाई, कुसुमित वन की कहे को गाई,
पवन बहत झकझोर की।।
छत्र चमर लै सखिगण सेवहिं, नाच गाय प्रभु को सुख देवहिं,
नूपुर के नव शोर की।।
हर्षण वीणा वेणु बजावहिं, सबके हृदय हर्ष उपजावहिं,
सुख सुषमा रस बोर की।।

(९४१)

रसिया राम हिंडोर झूलैं सिय के संग।
चन्द्रकला सिय ओर झुलावै, चारुशिला पिया ओर,
गहि गहि डोर उमंग।।
हेमा क्षेमा मदन मंजरी, सखि सुभगा सुख ठौर,
लक्ष्मणा ह्वै दंग।।
पद्म गंधिनी वर आरोहा, नृत्य गान रस बोर,
बजत वाद्य बहु रंग।।
झमकि झमकि झूलन दोउ झूलैं, झूलन झाँकी जोर,
बढ़वति प्रेम तरंग।।

चितवनि मुसकनि पर्श परस्पर, अलियन को चित चोर,
पुलकत अंगन अंग॥
नील पीत पट फहरनि भावति, माल टुटनि झक झोर,
झूलन झुकनि अभंग॥
हर्षण श्यामा श्याम सुशोभा, देत भवहिं ते छोर,
लाजत रती अनंग॥

(९४२)

आज प्रमोद विपिन सरयू तट, पिय प्यारी दोउ झुलत हिंडोर।
पावस ऋतु प्रिय परम सुहाई, रिमझिम वर्षै मेह नेराई,
कुहू कुहू कोयल कल कुहुकति, नृत्यहिं नव नव वन बहु मोर॥
प्रकृति प्रभा मुनियन मन मोहै, युगल सेव हित सुन्दर सोहै,
मधु मय मधुर कदम्ब की डारी, जहँ शुचि सरयू लेति हिलोर,
झुकि झुकि श्यामा श्याम सुहावै, परसत लहर महा मुद पावै,
फहरत पट घन विद्युत आभा, रसमय रसिकन के चित चोर॥
मंद मंद मुसुकत मन हारे, शत शत काम विमोहन वारे,
चितय परस्पर दै गल बाहीं, रसहिं रसे राजत रस बोर॥
अलिगन मेघ मलारहिं गावैं, नृत्य कला करि भाव भुलावैं,
रिझवहिं प्यारी प्रीतम रसि-रसि, लखि लखि जड़ चैतन्य विभोर॥
गगन विमान पुष्प सुर वर्षत, जय जय कहत राम रस कर्षत,
नचहिं देव रमनी नभ ऊपर, उर भरि सेवहिं युगल किशोर॥

आनँद उमड़ि चहूँ दिशि छायो, रस ही रस एक रह्यो अमायो।
सीता राम परम परमारथ, हर्षण हिय बिच भयो अँजोर॥

(९४३)

झूलत राम नयन सर मारी।
ललित ललिहिं उर लाय प्रेम ते, रसिकन को हिय हारी॥
सिया अलक पिय अलक ते उरझी, युग नागिन सी कारी।
हर्षण उमगि चल्यो सुखभारी, सबहिं सखी सब वारी॥

(९४४)

सखि श्यामा श्याम झमकि झुकि झूलैं।
शीतल सुखद बहत वर वायू, रिमझिम बूँद अतूलैं॥
हरित हरित दोउ वसन विभूषण, हरित सु सरयू कूलैं।
मन्द मन्द मुसकानि मजे की, नयन शयन सखि फूलैं॥
मेघ मलार मुरलि महँ गावत, लेत सबहिं बिनु भूलैं।
आ आ आ आ अली अलापैं, नृत्यत सब सुधि भूलैं॥
वीणा झाँझ मृदंग बजावहिं, आनँद बढ़त अतूलै।
लखि लखि देव सुमन शुचि वर्षत, हर्षण विसरत शूलैं॥

(९४५)

हिंडोरे झूलत प्रीतम प्यारि।
नमि नमि जाति कदम की डरिया, झरत प्रसून अथोरे॥

मन्द मन्द वर्षत घन बुन्दन, सरयू उठत हिलोरे।
नचत मयूर जहाँ तहँ दर्शत, दादुर करि बहु शोरे॥
वन सम्पति भ्राजति सुख दायिनि, हरित हरित हर ठौरे।
लखि लखि लोचन श्रावण शोभा, रसिकिनि रसिक विभोरे॥
आनँद मगन गाय धुनि कजली, सखियन सुख रस बोरे।
वाद्य बजाय अली हिय हर्षहिं, हर्षण के चित चोरे॥

(९४६)

आजु युगल वर झूलत फूले फूले फूले।
श्यामा श्याम मधुर रस वर्षत, श्री सरयू के कूले॥
पुष्पित कदम पुष्प मय डरिया, पुष्प हिंडोर अतूले।
पुष्पन मुकुट चन्द्रिका पुष्पनि, भूषण पुष्प अमूले॥
पुष्पन हार लुभत मन मधुकर, पुष्पहिं पहिरि दुकूले।
पुष्प मई सब सखी सुहावै, पुहुपहिं पुहुमि अधूले॥
माधुरि मुसुकनि पुष्प विखेरत, रस रसिया झुकि झूले।
सुर तरु सुमन सुरहु झरि लावत, जय कहि हर्षण भूले॥

(९४७)

भींजि रहे दोउ प्राण आज मणि पर्वत झूलत।
उमड़ि घुमड़ि घन घहरत वर्षत, चपला चमकि चुपान॥
बोलहिं मोर मुदित मन नृत्यत, श्रावण समय सुहान।
सरयू ऊर्मि उठति उर उमगति, मनहु मनोर्थ महान॥
उतरि हिंडोर प्रिया अरु प्रीतम, ठाढ़े तरु तर आन।

सिय शिर श्याम स्व अम्बर कीन्हें, मानहु पीत वितान।।
पिय मुख जल कन सिय पट पोंछति, सिय मुख पिया सुजान।
भींजे पट तन द्युति लखि सखियाँ, हर्षण हर्षि लुभान।।

(९४८)

झुकि झुकि झमकि झुलनिया, लखो श्यामा श्याम की।
आवत जात अवनि अरु ऊपर, दम दम दम दमकनियाँ।।
श्याम गौर मधुमय मन मोहति, छबि छहरति छन छनिया।
अनुपम अकथ अगाध भरी रस, सुरसरि सत सुख खनिया।।
कोटि काम छबि लाजति छायहिं, शशि शत अधिक सोहनिया।
उचकनि उमगनि उर उर लावनि, अधरामृतहिं पिअनियाँ।।
चितवनि मुसुकनि मुरि मुख मोरनि, मधु मय मधुर मोहनिया।
श्रावण साज सबहिं सुख सरसनि, हर्षण हिय हर्षनिया।।

(९४९)

सदा सावन सदा सावन सदा सावन सुहावे री।
हिंडोरे राम सिय झूलैं, सरित सुख की बहावें री।।
सखी सब सोहि सुख पावैं, मेघ मालार धुनि गावैं।
उठे घन श्याम मृदु गर्जत, चमक चपला छिपावै री।।
हरित तृण भूमि भल तरुवर, सरित शुचि सरयू सु सुखकर,
हिलोरें लेति हर हर हर, नचैं मोरा मोहावे री।।
प्रकृति सुठि सुखमय सुहावे, सबहिं मन मोदहिं बढ़ावे,
हरैं हिय युगल जन जन के, हर्ष झूलन झुलावे री।।

(९५०)

झमकि झुकि झूलत झोंको देत।
पिय प्यारी दोउ सुभग सलोने, श्रावण सुख सुठि लेत॥
नमि नमि जाति कदम की डरिया, झरत पुष्प शुचि श्वेत।
घन दामिनि द्युति दम दम दमकति, कनक हिंडोर अजेत॥
दिये परस्पर भरि भुज अंसहिं, रसिया युग कुल केत।
सखि समूह सेवा सुख सरसहिं, गावहिं कजली चेत॥
तरुवर लता विहँग मृग जीवहु, सुनि सुख शान्ति उपेत।
राम सिया रस मय लखि हर्षण, को न बसै रस खेत॥

(९५१)

झूले में किशोरि किशोर अली अति आनँद पइये।
झूलन कुंज बन्यो नव रतनन, छबि हिंडोर किमि गइये॥
जग जग ज्योति हेम-मणि मरकत, देखत भानु भुलैये।
पान दान इत्रादि चमर छड़ि, छत्र छजत छबि छैये॥
सखि समाज शोभित सब भाँतिहिं, सेवा सुख सरसैये।
कोउ नृत्यहिं कोउ गावहिं स्वर भरि, मधुर अलाप अघैये॥
कोउ वीणा कोउ वेणु बजावहिं, मधुर मधुर सुख दैये।
हर्षण लली लाल लखि लोने, लोचन फल गुन लइये॥

(९५२)

श्रावण सुखद सुहावन सजनी रसिया झुलत हिंडोरा ना।
तट तमाल तरुवर की छाया, श्यामा शाम अथोरा ना॥

जटित नील मणि श्यामहिं झुलना, श्यामहिं डोर झकोरा ना।
श्यामहिं भूमि श्याम सब लतिका, श्याम मेघ मृदु शोरा ना॥
कोकिल श्याम कुहू कुहु कुहकति, श्याम मोरनी मोरा ना।
श्याम सुभग रस मय रघुनन्दन, छवि श्रृँगार एक ठौरा ना॥
एक गौर सियजू सुख कन्दिनि, विद्युत रस बोरा ना।
श्याम गौर लखि झूलन झाँकी, हर्षण हृदय विभोरा ना॥

(९५३)

हरित हिंडोर हरु हरु झूलत हरितहिं हरित हरी रे हारी।
हरित वसनवर हरित विभूषण, हरितहिं हार परी रे हारी॥
हरितहिं सिया साटिका शोभित, भूषण हरित जरी रे हारी।
हरित हरित सिय सखी सुहावै, हरित चीर छहरी रे हारी॥
हरित हरित तरुवर वर बेली, हरितहिं धरा धरी रे हारी।
श्रावण हरित हँसत हरि हेरत, हरित लहर लहरी रे हारी॥
केकी कीर हरित मन मोहैं, विहँसत राम ढरी रे हारी।
हर्षण हृदय हरीतिमा हेरत, हर्षि कह्यो हरि हरी रे हारी॥

(९५४)

हिंडोरे झुलि रहे दोउ प्रान।
रसिया रसिक राय रघुनन्दन, जनक लली रस खान॥
बोलनि मधुर हँसनि हिय हारी, काढ़ लेति जनु जान।
रसहिं रसे दोउ दृगन लड़ावै, फेरि कपोलनि पान॥
भरि भुज अरुझि रहे सुख साने, करत अधर रस दान।

चन्द्रकला लखि युगल माधुरी, प्रेम पगी उर आन।।
गावन लगी समय अनुहारी, छेड़ि वीण वर तान।
सुनि सुनि अलिन सहित पिय प्यारी, हर्षण हिय हर्षान।।

(९५५)

झुलत झमकि झुलनवाँ पगे पिय प्यारी।
तटनि सरोजा डार कदमकी, लतिकन बनो वितनमा।।
कल कल करति किलोल सरित जहँ, उछरति उर उमगनवाँ।
पैंग भरत राजत रघुनन्दन, सिय सह अधिक सुहनवा।।
पद तल अरुण अमल सखि निरखहिं, लोने ललित लोभनवाँ।
शुचि संगीत साज सब सुखमय, सेवहिं सखि सुख सनमा।।
नृत्य नाद नूपुर झनकारी, छाई भूमि गगनवाँ।
हर्षण सुरन सुमन झरि लावत, रिमझिम मेह मगनवाँ।।

(९५६)

आजु अली लखु अवध बिहारी।
सरयूतीर सुखद कुंजन बिच, सुन्दर तरु तमाल की डारी।।
झूलत झमकि हिंडोर मुदित मन, सोहत संग सिया सुकुमारी।
झुकि झुकि पैंगहिं भरि झकझोरत, डरपति भय भरि जनक दुलारी।।
पकरि पकरि पिय को प्रिय कटि पट, लेति सम्हारि सहारा भारी।
कहुँ कहुँ लिपटि जाति पिय उर महँ, दै गलबाँह कबहुँ हिय हारी।।
घन दामिनि की उलहत उपमा, रस ही रस वर्षावन वारी।
हर्षण सखी कहहि कहुँ कारे, जानत पर पीरहिं अविचारी।।

(९५७)

भरियो पैंगे सम्हार हो मोरी प्यारी न डरपै।
हौ तुम पुरुष कठिन छलकारी, वे हैं सिय सुकुमार हो॥
झमकि झमकि झूलन झकझोरत, निर्दय निपट कुमार हो।
सखियन कान छोड़ि जो देहौ, फल भोगि हौ हिय हार हो॥
तिय करि तुमहिं बोरि रंग फागुन, खेलि हैं फाग पुकार हो।
सुनि सखि बैन श्याम मधु मुसुकत, रसिया रस रिझवार हो॥
झूलत चितय चित्त कहँ चोरत, मन मोहन सुख सार हो।
हर्षण हँसि हँसि लगी झुलावन, सखियाँ सिय सरकार हो॥

(९५८)

झूलन बाँकी झुलै दोउ आज सरयू कूले।
श्यामा श्याम सुभग सुख सरसत, रस रसिया रस राज॥
छहरति छटा छजति क्षिति ऊपर, कोटि काम रति लाज।
मुसकनि मधुर चारु चष चितवनि, लटकनि ललित सुसाज॥
मृदु बतरात विपिन श्री वरणत, सुख प्रद सखिन समाज।
उर उमंग उमगत अलबेली, झुलवहिं झमकि सुभ्राज॥
नृत्य गान रस भूमि अकाशहिं, छायो अनँद अवाज।
हर्षण हर्षि सुमन सुर झरि झरि, बाद्य बजाइ विराज॥

(९५९)

झूलन की छबि न्यारी लखो री आली।
श्याम गौर भुज अंश परस्पर, गंग जमनु सी धारी॥

नख शिख वसन विभूष विभूषण, लली लाल हिय हारी।
कुण्डल कलित कपोल किलोलत, मनहुँ मीन वर वारी॥
नयन नुकीले कल कजरारे, चितवनि जादू डारी।
मधुर मधुर मुसुकत मन मोहन, जड़ चेतन सुखकारी॥
अधर अरुणिमा अमिय माधुरी, दाड़िम दशन देवारी।
हर्षण हिय के हरण सलोने, बने रहैं दृग तारी॥

(९६०)

रसिया रसिकिनि को झूलावैं, झोंका झुकि झुकि झमकै आन।
मधु ते मधुर मलार अलापै, गावै मीठी मीठी तान॥
मंद मंद तहँ परत फुहारी, सेवत राम सिया सुकुमारि,
सुनि सुनि मेघवा भुंइ नियरान॥
कोयल कुहू कुहू करि कूंजति, रसि रसाल हिय आस को पूजति,
मोरवा नचहिं मनोहर वान॥
प्रकृति प्रभा पावस परकाशी, सोहति सुख सरसति सम दासी,
लली लाल सुख हेतु लोभान॥
नाचहिं गावहिं नवल नवेली, लखि लखि युगल किशोर सहेली,
रसिया के रस रसी भुलान॥
निरखति प्रिया प्राण प्रिय आनन, प्यारो पगत प्रिया मुख पानन,
सुख सनि भूलत दोउ अपान॥
लखि लखि देव पुष्प बहु वर्षैं, जय जय कहि सबके हिय हर्षैं,
वाद्य बजावहिं चढ़े विमान॥

मुख मधु मुसुकि सिया सुखदाई, गहि पिय पानी हिंडोर बिठाई,
हर्षण दै गलबाहिं सुहान॥

(९६१)

प्रीतम प्यारी प्रेम पगे हैं रसि रसि पीवत अधरवा रे।
दोउ दोउ को भुज फाँसि लिये हैं, तजन शंक जनु बसहिं किये हैं,
हिय हिय जोरे जियरवा रे॥
नयनन नयन मिलाय हँसन ते, भाव भंगिमा बनै न मन ते,
इक इक प्राणन पियरवा रे॥
झुलत हिंडोर छहर छबि पुंजन, करति प्रकाश परम प्रिय कुंजन,
सखि सब सोहैं नियरवा रे॥
नवल नवल अनुराग भरी सब, झुलवहिं लाल लली करि अनुभव,
भूली भव को भमरवा रे॥
नृत्यहिं नूपुर छुम छुम बाजत, मेघ मलार अलाप सुहावत,
मोहत मनहिं मधुरवा रे॥
वीणा वेणु स्वरन झनकारहिं, वाद्य कला पिय को हिय हारहिं,
सखिगन सोहैं सुघरवा रे॥
प्रकृति छटा नहिं वरणि सिरावति, सेवति युगल सुखहिं सरसावति,
हर्षण हर्षै हियरवा रे॥

(९६२)

नीकी लगै मोहि प्यारी झुलावति पिय को हिंडोर।
गहि कर कमल डोर रेशम की, अरुण अँगुलियाँ प्यारी॥

मधुरी मुसुकनि पिय तन चितवनि, अहो हृदय हठि हारी।
लखि लखि बदन पिया को मोहति, सुख सुषमा श्रृँगारी॥
नख शिख भूषण परम प्रकाशित, तन द्युति मनहु दिवारी।
चादर चोली सुभग साटिका, छजहिं कनक जरतारी॥
मधुर मधुर मुख मंडल श्रमकन, पद्म पत्र कण वारी।
हर्षण पेखि प्रेम बस प्यारो, गहि बहियाँ बैठारी॥

(९६३)

प्यारो झूलै झुलावति प्यारी।
कंज खंज मृग मीन लोचना, श्यामा श्याम निहारी॥
प्रिया प्यार लखि के रघुनन्दन, दीन्ह अपुहि कहँ वारी।
शारद शशि शत मुखनि माधुरी, पियत रसिक हिय हारी॥
झुलन झुलावन दम्पति भूले, रूप रसिक सुख सारी।
परश विरह सहि सके न सियवर, यदपि लखत सुकुमारी॥
प्यारी पाणि पकड़ि प्रिय प्रीतम, परम प्यार बैठारी।
हर्षण हृदय हर्षि सब सखियाँ, जय जय जयति उचारी॥

(९६४)

झूलन झाँकी लखो लली लाल की।
शोभा सदनि मधुर रस वर्षनि, भूषित मणि गण जाल की॥
चितवनि मुसुकनि मधुहिं बिखेरी, मोहति मन सुख शाल की।
हर्षण हृदय हर्ष उपजावनि, झुलनि झुकनि चित चाल की॥

(९६५)

झूलत पिय अरु प्यारी श्री सरयू किनारे हरे।
वन प्रमोद बिच हरित हिंडोरे, कलित कदम्ब की डारी॥
गरजत मेह दमकि दुरि विद्युत, सभय सिया सुकुमारी।
नयन मूँदि दै कर्ण अँगूठा, पिय उर छिपी पियारी।
हृदय पाय पिय सुखी भये बहु, लिय दोउ भुजन मझारी॥
जनि तुम डरहु जनक की बेटी, त्रिभुवन की उजियारी।
तुमहिं देखि दामिनि दुरि जावति, लाज लगति तेहिं भारी॥
हर्षण तन द्युति तोरि प्रिया सत, द्युति मानिन मद गारी॥

(९६६)

झूलत राम राजिव नयन।
जनक लली सँग बैठि हिंडोरे, रसिक रस को अयन॥
स्वयं गाय सखियन सुख देवत, मधुर मधुर मृदु बैन।
कबहुँ प्रिया को प्रेरि गवावत, वेणु धुनि जित मैन॥
प्यारी प्रीतम लेत अलापहिं, सुख चराचर दैन।
वन-मृग-मोर कीर अरु कोयल, सरित जीव जितैन॥
सुनहिं शान्त श्रवणन सुख सरसत, सिद्ध सुर चित चैन।
नृत्य गान वर वाद्य मधुरिमा, हर्ष हिय को लैन॥

(९६७)

तेरी झुलनि पर वारि रे मोरे प्राणों की प्यारी।
रस वर्धनि रस दानि रसिकिनी, मुसुकनि मधु रस झारि रे॥

चितवनि में चित-चोरहिं चोरी, नयनन की बलि हारि रे।
चन्द्र वदनि तन चन्दन चर्चित, चम्पक वरणि हमारि रे॥
श्री फल कनक कदलि अरु कमलहु, दाड़िम विम्बा वारि रे।
केहरि करि कपोल शुक कोकिल, खंज मीन मृग हारि रे॥
आत्माधिक प्रिय प्राण वल्लभे, भूषण वसन सम्हारि रे।
सबहिं भाँति अपने वश कीनी, हर्षण हिय सुख सारि रे॥

(९६८)

तेरी झुलनि हिय हारी पियारी मोरी।
झमकनि झुकनि हृदय की हुलसनि, लटकनि ललित लोभारी॥
उमगि उमगि उर ते उर लावनि, परमा प्रीति पसारी।
चितवनि मुसुकनि मधु वर्षावनि, मधुर मधुर रस वारी॥
अरसि परसि हिय की हर्षावनि, प्राणन प्राण हमारी।
पद्म गंधिनी मन की मोहनि, सुन्दरि सुठि सुकुमारी॥
अंग अंग अनुपम हिय हारिनि, सरित सुधा सुख कारी।
हर्षण वसन विभूषण भूषित, सुख सुषुमा श्रृँगारी॥

(९६९)

प्राण प्यारे रचे अहो अनुपम हिंडोर।
श्रावण सुख मन भावन दीन्हें, झूलैं संग लिये रस बोर॥
पाइ प्यार लखि कृपा रावरी, हर्षित हिय में उठे हिलोर।
मुसुकनि मधुर चितय चित चोरनि, निरखत मन में मचै मरोर॥
श्याम शरीर मयंक मुखहिं लखि, लोभहिं लाजहिं काम करोर।